डायन

भयकथा संग्रह

दिपक कदम

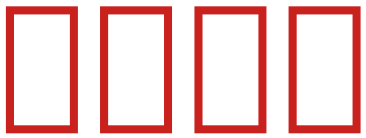

डायन

भयकथा संग्रह

दिपक कदम

कॉपीराइट © 2022 दीपक कदम
सभी अधिकार सुरक्षित हैं। इस पुस्तक के सभी पात्र और घटनाएँ काल्पनिक हैं। किसी भी जीवित या मृत व्यक्ति से कोई भी समानता संयोगवश है और लेखक का ऐसा कोई इरादा नहीं है। प्रकाशक की स्पष्ट लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक का कोई भी भाग पुनरुत्पादित या किसी पुनर्प्राप्ति प्रणाली में संग्रहीत नहीं किया जा सकता है या किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग या अन्यथा प्रसारित नहीं किया जा सकता है। ISBN-13: 9781234567890 ISBN-10: 1477123456 कवर डिज़ाइन: Pixabay, Canva लाइब्रेरी ऑफ़ कांग्रेस नियंत्रण संख्या: 2018675309

[redacted]

[redacted] [redacted]
[redacted]
[redacted]
[redacted]
[redacted] [redacted]
[redacted], [redacted]
[redacted]
[redacted]
[redacted]
[redacted] [redacted]
[redacted] [redacted]
[redacted] [redacted]
[redacted] [redacted] [redacted] [redacted]

एक आंख

निलेश और प्रमोद घनिष्ठ मित्र थे। वे बचपन से साथ पले-बढ़े थे। वे साथ-साथ स्कूल जाते थे। जून का तीसरा सप्ताह था। स्कूल शुरू हुए आठ दिन हो चुके थे। दोनों नौवीं कक्षा में पढ़ते थे। स्कूल दोपहर बारह बजे शुरू होता था और शाम छह बजे समाप्त होता था। हाल ही में भारी बारिश हुई थी।
शनिवार का दिन था, स्कूल का आधा दिन हो चुका था। दोपहर के तीन बज रहे थे।
आखिरी पीरियड शुरू हो चुका था। लेकिन शिक्षक बीमार थे और स्कूल नहीं आए थे। बच्चे कक्षा में खेल रहे थे। बाहर हल्की-हल्की बारिश हो रही थी।
"पाम्या, आज स्कूल का आखिरी दिन है, इसलिए मैं अभी घर जा रहा हूँ," नीलेश ने प्रमोद से कहा।
"तो फिर हमें कहाँ जाना चाहिए?" प्रमोद ने पूछा।
"चलो नदी पर चलते हैं और मछली पकड़ते हैं," नीलेश ने अपनी नम आंखों को झपकाते हुए कहा।
"आर पर पाऊस पडाय लागलाय लगा"
"ओह, सर्दी का मौसम बढ़िया है, चलो चलते हैं और एक घंटे में वापस आ जाते हैं, और फिर कल छुट्टी का दिन है, ठीक है?"
प्रमोद ने कहा, "ठीक है, लेकिन हम मछली कैसे पकड़ेंगे? हम एक कांटा लाएंगे।"
"इतना तनाव मत लो," नीलेश ने अपना ब्रीफकेस खोलते हुए प्रमोद को अंदर रखा बैग दिखाते हुए कहा।
प्रमोद ने थोड़ी देर सोचा और फिर कहा, "ठीक है, लेकिन ज्यादा शोर मत करना।" "आपको इसे पीने की ज़रूरत नहीं है, पिताजी," नीलेश ने खुशी से कहा।
3:30 बजे स्कूल की घंटी बजी और बच्चे एक-एक करके स्कूल से बाहर निकल गए।
नीलेश और प्रमोद स्कूल परिसर से बाहर निकले और नदी की ओर चल दिए।
लगातार तेज बारिश हो रही थी। बीच-बीच में हल्की बारिश भी हो रही थी। नीलेश और प्रमोद दोनों नदी की ओर तेजी से चल रहे थे।
प्रमोद ने कहा, "नदी नीली मछलियों से भरी होगी।"
"अगर तुम नहीं चाहते तो तुम्हें क्या फर्क पड़ता है, इसलिए मैंने कहा चलो आज मांस पकड़ने चलते हैं।"

दोनों अब एक खेत से गुज़र रहे थे। यह रंगा नायक का खेत था। उस खेत से होकर नदी तक जाने का रास्ता था, लेकिन दोनों को अभी भी कम से कम दो फर्लांग चलना था। शाम के चार बज चुके थे। दोनों खेत के ऊबड़-खाबड़ किनारों और रास्तों पर चल रहे थे। आगे एक मोड़ पर, उन्होंने दूर से किसी को देखा। उसने एक फीकी कमीज़ पहनी हुई थी, और उसकी लाल पतलून हवा में लहरा रही थी। जैसे ही दोनों आगे बढ़े, उन्हें एहसास हुआ कि वह बुज़गाँव का रहने वाला है।
"अरे, इस बकवास का क्या फायदा?" प्रमोद ने संदेह जताते हुए कहा।
"हा हा हा... अगर यह खेतों में नहीं होता, तो तुम्हारे घर में क्यों होता?" नीलेश ने हंसते हुए कहा।
"और अब ऐसा नहीं है, जबकि यह आ चुका है, मेरा मतलब है कि अभी तक पौधे नहीं उगे हैं और यही बात मायने रखती है", प्रमोद का संदेह सही निकला।
“और अब हम क्या करें, नायक, तुम इतने ठंडे क्यों हो?” नीलेश ने उस दैत्य को देखते हुए कहा। दैत्य का मुँह एक बोरी का बना था। दो आँखों की जगह एक आँख खाली थी, और दूसरी में एक हरे-सफेद रंग की आँख लगाई गई थी। देखने में वह असली आँख जैसी लगती थी। मुँह काले धागे से सिला हुआ था। ऊपर से साधारण दिखने वाला वह दैत्य, करीब से देखने पर भयानक प्रतीत होता था।
"चलो, हितन," प्रमोद ने कहा। लेकिन नीलेश उस बूढ़े आदमी को घूर रहा था। "अरे निल्या, चलो, हमें अभी और आगे जाना है," प्रमोद ने कहा।
"इस बूढ़े आदमी के घर आने के बाद मुझे वह बूढ़ा आदमी याद आने लगा है," नीलेश ने बूढ़े आदमी के चेहरे पर मुक्का मारते हुए कहा।
"हाहा... हा... यह भारी लग रहा है, यार... मुझे एक मुक्का मारो... मेरी खातिर," नीलेश ने कहा, तभी प्रमोद भी आगे आया और उसने बूढ़े आदमी को एक मुक्का मार दिया।
दोनों ने मिलकर उस बदमाश को पीटना शुरू कर दिया। बदमाश लगभग ज़मीन पर गिर पड़ा था।
"ओह, हाँ... अगर वो नायक आ गया तो वो हमें रोक देगा, चलो हितन," प्रमोद ने कहा।
"चलो, चलते हैं, हितान," नीलेश ने लंगड़ाते हुए आदमी को छूते हुए और उसे सीधा करते हुए कहा।
प्रमोद ने कहा, "और निल्या... उसकी एक आंख कहां चली गई?"
"किस तरह की... आंख?" नीलेश।

पिटाई के कारण बूढ़ी औरत की एक आंख बाहर निकल आई थी। दोनों ने चारों ओर देखा, लेकिन वह आंख, वह बड़ा सा सफेद-हरा सा धब्बा, कहीं भी दिखाई नहीं दिया।
"वापस आओ, वो आंख... चलो, हितान," नीलेश ने कहा, और वे दोनों जल्दी से वहां से चले गए।
पांच बज चुके थे। दोनों नदी पर पहुँचे और मछली पकड़ने लगे। दोनों काफी देर तक मछली पकड़ते रहे। उन्हें समय का पता ही नहीं चला। उन्हें यह भी नहीं पता चला कि कब बादल भरे आसमान में पहाड़ों के पीछे सूरज छिप गया। देखते ही देखते अंधेरा छाने लगा।
"अरे, अब तो अंधेरा हो रहा है, चलो घर चलते हैं," प्रमोद ने कहा।
उन दोनों ने कई छोटी-बड़ी मछलियाँ पकड़ीं और उन्हें एक प्लास्टिक की थैली में भर दिया।
"हां, हां, पाम्या... चलो अब चलते हैं, हमने मांस पकड़ लिया है।"
दोनों वहां से चले गए। पीठ पर बैग और हाथों में मछलियों से भरी थैली लिए, दोनों उसी रास्ते पर चल पड़े जिससे वे आए थे। शाम के सात बज चुके थे। हल्की बूंदा-बांदी शुरू हो गई थी। दोनों रंगा नाइका के खेत की ओर चल पड़े। खेत से होकर जाने वाला रास्ता दस से पंद्रह मिनट बचाएगा। दाहिनी ओर का रास्ता लंबा था।
"पाम्या... यहाँ पहुँचते ही चलते हैं... जल्दी चलते हैं," नीलेश ने कहा। "लेकिन आज रात मैं बिना किसी बाधा के जाना चाहता हूँ...", प्रमोद ने हिचकिचाते हुए कहा।
“तुम किस बात से डर रहे हो... मैं यहाँ नहीं हूँ... चलो,” नीलेश ने प्रमोद को आगे खींचते हुए कहा। दोनों खेत से होते हुए आगे बढ़े। नायक का खेत बहुत बड़ा था। मुख्य सड़क की ओर दो-तीन रास्ते जाते थे।
"चलो, उस पुराने घर में जाकर देखते हैं।"
"ए बाबा गप गुमान चल या वाटन तिकडं नगो ह्या येळला"
“यह रास्ता लंबा होता जा रहा है... चलो, हितन,” नीलेश ने आगे बढ़ते हुए कहा। प्रमोद भी उसके पीछे-पीछे चल पड़ा।
दोनों आधा रास्ता चल चुके थे। दूर से ही दोनों की निगाहें उस जगह पर टिकी हुई थीं जहाँ आग लगी थी। दोनों उस जगह पहुँच गए लेकिन...
अब चूंकि बुज़गाँव उस स्थिति में नहीं था…

दोनों एक पल के लिए स्तब्ध रह गए।
“वो बुज़गाँव कहाँ गया?” प्रमोद ने डरी हुई आवाज़ में कहा।
“अगर वो वापस आया तो उसकी आँखें खुल जाएँगी…”, नीलेश हँसते हुए बोला, लेकिन प्रमोद स्तब्ध खड़ा रहा। एक अनजाना डर उसके मन में घर कर गया था।
"अरे निल्या बाबा, जल्दी चलो, मुझे अब डर लग रहा है," प्रमोद ने कहा।
"बर बाबा चल जाऊया"
वे दोनों खेत से निकलकर मुख्य सड़क पर आ गए।
उस विशाल मैदान में कहीं कुछ हलचल हो रही थी। अधविकसित पौधों के बीच से तिरछे चलते हुए, वह कुछ खोज रहा था... आखिर क्या खोज रहा था वह?
निलेश और प्रमोद दोनों अपने-अपने घर पहुँच गए। देर से घर आने के कारण दोनों को खूब डांट पड़ी।
बाहर मूसलाधार बारिश हो रही थी। सुबह के 1:30 बज चुके थे। खिड़की के पास सो रहे नीलेश को कुछ हलचल महसूस हुई और वह जाग गया। घर में सभी लोग चैन से सो रहे थे। खिड़की के बाहर सरसराहट की आवाज आई। नीलेश बिस्तर से उठा और बैठ गया। उसने धीरे से खिड़की खोली। बाहर घना अंधेरा था। धुंधली रोशनी में उसने बरामदे में कुछ देखा। वह फटे-पुराने, गंदे कपड़ों और बोरी से सिले गोल चेहरे वाली किसी चीज को ढूंढ रहा था। यह देखकर नीलेश का दिल बैठ गया। उसके पेट में अजीब सी बेचैनी हुई, गला सूख गया, उसने चीखने की कोशिश की लेकिन आवाज गले में ही अटक गई। उसका शरीर कांपने लगा। बाहर जो भी था, उसने धीरे- धीरे अपना सिर नीलेश की ओर घुमाया। नीलेश कांपते हुए उस आकृति को देख रहा था।
अब वह धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था। मूसलाधार बारिश में पूरी तरह भीगा हुआ उसका शरीर भारी कदमों से आगे बढ़ रहा था। कुछ ही क्षणों में वह खिड़की तक पहुँच गया।
निलेश एक मूर्ति की तरह उसे घूर रहा था। उसका दिमाग उसकी आँखों के गहरे काले गड्ढों में खोया हुआ था। वह आगे बढ़ा, खिड़की से अपना हाथ बाहर निकाला और पर्दों के बीच से हाथ अंदर सरकाते हुए निलेश के चेहरे को छुआ। उस ठंडे, गीले स्पर्श से निलेश की रीढ़ में सिहरन दौड़ गई।
निलेश ज़ोर से चीखा। घर में सब जाग गए, घर की बत्तियाँ जल रही थीं, सबने निलेश की तरफ देखा। निलेश के शरीर से खून की बूँदें बह रही थीं। उसकी आँख

के गड्ढे से खून निकल रहा था। निलेश बिस्तर पर बेहोश पड़ा था। उसकी एक आँख गायब थी और खिड़की खुली हुई थी।
अगले दिन सुबह हो चुकी थी। नीलेश की घटना की खबर पूरे गाँव में फैल चुकी थी। प्रमोद को भी नीलेश के बारे में पता चला। यह सुनकर प्रमोद के पैरों तले ज़मीन खिसक गई, उसे तेज़ बुखार चढ़ गया, लेकिन उसने कल की घटना के बारे में किसी को नहीं बताया।
प्रमोद एक हफ्ते तक स्कूल नहीं गया, नीलेश को तालुका के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना का उसके मन पर गहरा असर पड़ा और उसकी दृष्टि के साथ-साथ उसकी वाणी भी कमजोर हो गई थी।
तीन स्कूली छात्राएं रंगा नाइका के खेत से पैदल जा रही थीं, हल्की-हल्की बारिश हो रही थी। दूर से उन्होंने किसी को बारिश में बेसुध खड़ा देखा, जिसने फटी हुई कमीज और गंदी पतलून पहनी हुई थी जो हवा में लहरा रही थी। तीनों उसके पास गईं। वह कुबड़ा था। उसका मुंह बोरी से बंधा हुआ था। दो आंखों की जगह खाली जगह थी और एक जगह पर एक बड़ी सफेद पानी से भरी आंख थी... बिलकुल असली आंख जैसी... अभी-अभी लगाई गई...

पीड़ित

यह सन् 1990 की बात है। कोंकण के एक छोटे से गाँव में मोरेश्वर नाम का एक गरीब युवक रहता था। उसके परिवार में एक शराबी पिता, एक बीमार माँ और गरीबी में जी रहे अठारह बच्चे थे। बड़ी बहन की शादी छह महीने पहले हुई थी और वह अपने ससुराल चली गई थी। जब उसने मना किया, तो ससुराल वाले उसे दहेज के पत्र भेजते रहे। एक-दो बार उसके पति ने उसे उसकी माँ के घर छोड़ दिया और पैसों को लेकर झगड़ा किया। किसी तरह, उसे मनाकर और कुछ पैसे देकर, वह उसके साथ ससुराल वापस चली गई।
मोरेश्वर का एक छोटा भाई था। उसका नाम गिरिधर था। गिरिधर चौदह वर्ष का था। मोरेश्वर गांव में जो भी काम मिलता, वो कर लेता था। मोरेश्वर को न तो नशे की लत थी और न ही शराब की। उसके दोस्तों का परिवार भी छोटा था। उसका एक दोस्त हनुमंत था। हनुमंत मछुआरा था। मोरेश्वर कभी-कभी उसके साथ मछली पकड़ने समुद्र में जाता था। दोनों मिलकर पकड़ी हुई मछलियाँ बाजार में बेचते थे और हनुमंत मोरेश्वर को थोड़े पैसे दे देता था।
एक दिन मोरेश्वर हनुमंत के साथ मछली पकड़ने समुद्र में गए। उस दिन उन्होंने थोड़ी अलग जगह चुनी थी। मोरेश्वर ने अपना जाल समुद्र में डाला। थोड़ी देर बाद जब जाल भारी हो गया, तो मोरेश्वर ने उसे ऊपर खींच लिया। जाल में कई छोटी-बड़ी मछलियाँ फँसीं।
मोरेश्वर मछली को बाल्टी में डालने लगा, तभी बाल्टी में कुछ धड़ाम से गिर गया। मोरेश्वर ने बाल्टी में झाँका। बाल्टी में एक काली मूर्ति पड़ी थी। मोरेश्वर ने मूर्ति को बाल्टी से बाहर निकाला और देखने लगा। यह एक छोटी सी मूर्ति थी, हथेली के आकार की। छोटी होने के बावजूद, मूर्ति पर बहुत बारीकी से नक्काशी की गई थी और उस पर जटिल रेखाएँ बनी हुई थीं। मूर्ति की आँखें लाल थीं। बाल लंबे थे, लाल बालों में से दो सफेद बाल साफ दिखाई दे रहे थे।
मोरेश्वर मूर्ति को आश्चर्य से देख रहा था। मोरेश्वर को मूर्ति कुछ अजीब लगी।
"क्या हुआ, मोर्या? तुमने अपने हाथ में क्या पकड़ा?" हनमंता ने पूछा।
"अरे देखो, यह मूर्ति तो घवलन की मका है," मोरेश्वर ने कहा।
हनुमान ने मूर्ति को अपने हाथों में लिया और उसे चारों ओर से देखा।

"यह कैसी मूर्ति है, बापरे? यह तो कांटे की तरह चुभ रही है। इसे अपने पास ही रखो," हनुमंता ने मूर्ति मोरेश्वर को देते हुए कहा।
मोरेश्वर ने मूर्ति को एक बार देखा और कहा, "मुझे डर लग रहा था, पिताजी, मैं इसे वापस पानी में छोड़ दूंगा।"
हनुमान ने सहमति में केवल अपना सिर हिलाया और मोरेश्वर ने मूर्ति को पानी में छोड़ दिया।
दोनों काफी देर से समुद्र में मछली पकड़ रहे थे। जब सूरज ढलने लगा, तो दोनों ने मछली पकड़ना बंद कर दिया और वापस लौट आए। आज उन्होंने बहुत सारी मछलियाँ पकड़ी थीं। दोनों मछलियों को बाजार ले गए और बेच दिया। हनुमंत को आज अच्छा मुनाफा हुआ। वह खुश हुआ और उसने मोरेश्वर को पचास रुपये दिए। मोरेश्वर पचास रुपये देखकर बहुत प्रसन्न हुआ।
जैसे ही शाम ढलने लगी, दोनों अपने-अपने घर लौट गए। मोरेश्वर दिन भर बहुत थका हुआ था। जब वह घर पहुँचा, तब रात के आठ बज चुके थे। घर पहुँचकर मोरेश्वर ने अपनी माँ के हाथ में पचास रुपये रख दिए। पचास रुपये देखकर मोरेश्वर की माँ बहुत प्रसन्न हुईं। उन्होंने पैसे भगवान के सामने रखे और मोरेश्वर को भोजन कराया।
"आज मेरी मां हनमन के साथ मछली पकड़ने गई थीं, मैंने आज बहुत सारी मछलियां पकड़ीं," मोरेश्वर ने कहा।
"मोरू, ऐसा करो और एक दिन अपना खुद का व्यवसाय शुरू करो।"
"हां, मैं आपको एक बात बताना भूल गया था, आज मछली पकड़ते समय मैंने एक मूर्ति को टक्कर मार दी," मोरेश्वर ने कहा।
मूर्ति टूट गई, वह समुद्र में गिर गई।
"हां, लेकिन देवी थोड़ी अकड़ी हुई लग रही हैं, मुझे नहीं पता कौन सी देवी हैं, मैं उन्हें वापस पानी में छोड़ रहा हूं," मोरेश्वर ने कहा।
बाद में, अपने गुस्से को काबू करने की हड़बड़ी में, मोरेश्वर मूर्ति के बारे में पूरी तरह भूल गया। रात के दस बजे के बाद सब सो गए। मोरेश्वर दिनभर की भागदौड़ के बाद तुरंत सो गया।
लगभग आधी रात के समय मोरेश्वर की नींद खुली। वह पेशाब करने के लिए उठा। वह पीछे के दरवाजे से बाहर आया। घर के पीछे एक छोटा सा कुआँ था। चाँदनी की हल्की नीली रोशनी रात के सन्नाटे में फैली हुई थी। बाहर कुछ कुत्ते भौंक

रहे थे। मोरेश्वर हमेशा की तरह आगे बढ़ा। पेशाब करने के बाद वह पीछे मुड़ा, और लौटते समय उसने धुंधली रोशनी में कुछ देखा। मोरेश्वर वहीं जम गया। कुएँ के पास, उसने दो छोटी, चमकती आँखें देखीं। लाल आँखें। जैसे ही मोरेश्वर आगे बढ़ा, उसने देखा कि यह एक छोटी सी मूर्ति थी, वही मूर्ति जो उसे समुद्र में मिली थी। मोरेश्वर मूर्ति को घूरता रहा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। उसके शरीर में कंपन होने लगी। उसकी छाती ज़ोर से धड़क रही थी। मोरेश्वर अंदर भागा और अपनी माँ को नींद से जगाया। वह अपनी माँ को घर के पीछे ले गया और कुएँ के पास मूर्ति के पास गया, लेकिन अब मूर्ति वहाँ से गायब हो चुकी थी। मोरेश्वर चकित रह गया।
मैंने मूर्ति यहीं देखी थी, वह कहाँ चली गई?
"मोरु, तुम जाग गए हो, अब जाओ और चैन से सो जाओ," मेरी माँ ने कहा और मोरेश्वर को घर ले गईं।
मोरेश्वर घर में आया लेकिन उसे पता था कि उसने कुछ भी महसूस नहीं किया था, उसने मूर्ति देखी थी, वह कुएं के पास थी।
लेकिन मूर्ति वहाँ कैसे पहुँची? मैंने ही तो उसे पानी में वापस छोड़ा था।
ऐसे ही सवालों ने मोरेश्वर को रात भर जगाए रखा। सुबह के किसी समय मोरेश्वर सो गया।
अगले दिन, मोरेश्वर सुबह-सुबह हनुमंथा के पास गया और उसे कल हुई सारी घटना विस्तार से बताई।
"माका, यह हनमंता बहुत डरा हुआ है," मोरेश्वर ने कहा।
"चिंता मत करो, मेरे वंश का एक भक्त है, चलो हम दोनों आज शाम एक-दूसरे से मिलते हैं," हनुमंत ने कहा, और मोरेश्वर तैयार हो गया।
ठीक शाम सात बजे, मोरेश्वर और हनुमंत भगत के घर गए। भगत गांव के द्वार के पास एक शिव मंदिर के पीछे रहते थे। दोनों उनके घर पहुंचे। भगत का घर बहुत बड़ा नहीं था, वे उस घर में अकेले रहते थे। घर में हर जगह देवी-देवताओं की मूर्तियां और तस्वीरें थीं।
भगत ने उन दोनों को देखकर कहा, "तुम दोनों यहां आगे बैठ जाओ।"
"नमस्कार, बाबा", हनुमंत आगे आए और उनके पैर छुए। यह देखकर मोरेश्वर भी आगे आए और उनके चरणों में गिर पड़े। भगत ने दोनों को बैठने को कहा, तो वे दोनों बैठ गए।
"हम्म, अब बताओ तुमने क्या किया है।"

मोरेश्वर ने कल से लेकर अब तक की सारी घटनाएँ एक ही साँस में सुना दीं। भगत ने शांत मन से सारी घटनाएँ सुनीं और अंत में कहा, "समुद्र में बह गई वह देवी देत्तिदामिनी नहीं है।"
"दे डीटी… दामिनी, इसका क्या मतलब है?" मोरेश्वर ने चिढ़ाते हुए पूछा। इस पर जोर से हंसते हुए भगत ने कहा, "ओह, तुम्हारा भाग्य खुल गया है, मोर्या, तुम जो दुर्भाग्य के शिकार होने के बावजूद इतने भाग्यशाली हो, मुझे लगता है तुम्हारा भाग्य बहुत चमक रहा है।"
मोरेश्वर ने हनमंता की ओर देखा, लेकिन उन्हें कुछ समझ नहीं आया।
"मुझे विस्तार से बताइए, बाबा, यह मोर्या बहुत डरा हुआ है," हनुमंत ने कहा। "डरने की कोई ज़रूरत नहीं है, अब जैसा मैं कहूँ वैसा करो, तुम्हें उससे जो भी चाहिए वो मिल जाएगा," भगत ने मोरेश्वर को बताया। दोनों की बातें सुनकर रोंगटे खड़े हो गए।
काफी समय बीत गया, कुछ समय बाद वे दोनों चले गए।
मोरेश्वर का मन लगातार बेचैन होता जा रहा था। अगर वह भगत की बात मान लेता, तो उसकी किस्मत खुल जाती। लेकिन...
यह विचारोत्तेजक भी था क्योंकि इस दुनिया में कुछ भी आसानी से और मुफ्त में नहीं मिलता।
बहुत सोच-विचार के बाद, मोरेश्वर ने अंततः भगत की बात मानने का फैसला किया। फिर भी, घर में गरीबी का माहौल था; चाहे वह कितना भी काम करे, गुजारा करना उसके लिए मुश्किल ही था। इस तरह जीने के बजाय, मोरेश्वर ने अपने सामने आए अवसर का लाभ उठाने का निर्णय लिया।
उस दिन मोरेश्वर ने सारी तैयारियां कर लीं, दूध और चावल एक कटोरे में निकाल लिए और भगत द्वारा दिए गए पाउडर और चाकू को घर में एक जगह छिपा दिया।
आधी रात हो चुकी थी। बाहर एक कुत्ता भौंक रहा था। मोरेश्वर धीरे से जागा। घर में सब लोग चैन से सो रहे थे। उसने सामान का थैला उठाया और घर के पिछले हिस्से में आया। उसने चुपचाप दरवाजा खोला। बाहर शुद्ध चांदनी फैली हुई थी। मोरेश्वर बाहर आया और धीरे से दरवाजा बंद कर दिया।
मोरेश्वर कुएँ के और करीब गए, उन्हें पता था कि मूर्ति वहीं होगी। वे कुएँ के किनारे-किनारे चले और देखा कि मूर्ति वहीं थी, शुद्ध चाँदनी में उसकी लाल आँखें और भी गहरी लग रही थीं।

मोरेश्वर मूर्ति के सामने बैठ गए। उनका हृदय तीव्र गति से धड़क रहा था। कांपते हाथों से उन्होंने थैली निकाली। उन्होंने दूध और चावल मूर्ति के सामने रख दिए। उन्होंने चाकू निकाला और उसे अपने दाहिने हाथ के अंगूठे पर घुमा दिया, जिससे अंगूठे से बहता हुआ रक्त मूर्ति पर गिरने लगा। उन्होंने अपने हाथ में दी गई औषधि ली और आंखें बंद करके देवता द्वारा दिए गए मंत्र का धीमी आवाज में जाप करने लगे।
कुछ ही क्षणों में, उसे एक हल्की सी आवाज़ सुनाई दी। कोई कुछ खा रहा था। मोरेश्वर भयभीत हो गया। उसने डर के मारे आँखें खोलीं और देखा कि उसके सामने रखा दूध और चावल गायब हो गया था। उस मूर्ति की आँखों से लाल रोशनी निकल रही थी। और फिर एक आवाज़ उसके कानों तक पहुँची।
"बोलो... यार... तुम क्या चाहते हो... तुमने मुझे समुद्र से बाहर क्यों निकाला... बोलो"
"माँ, मुझे माफ़ करना, मेरी एक इच्छा है..."
"मुझे बताओ तुम्हें क्या चाहिए... जल्दी बताओ।"
मैं अपने पिता की शराब की लत को दूर करूँगा, उन्हें नशामुक्त करूँगा। "इच्छा छोटी हो तो बोझ भी छोटा होता है, कल समुद्र को एक जीवित मुर्गी अर्पित कर दो... तुम्हारी मनोकामना पूरी हो जाएगी..."
यह सुनकर मोरेश्वर प्रसन्न हुए।
"मुझे अभी मुक्त करो, मुझे वापस समुद्र में छोड़ दो।"
यह सुनकर मोरेश्वर को भगत की कही बात याद आ गई। उसने कहा... "देत्तिदामिनी, मेरे लिए कुछ और मनोकामनाएं मांगो, और जब वे पूरी हो जाएंगी, तो मैं तुम्हें वापस समुद्र में छोड़ दूंगा," मोरेश्वर ने कहा। "ठीक है, लेकिन मैं तुम्हारी केवल चार और इच्छाएँ पूरी करूँगा, उसके बाद मुझे तुम्हें समुद्र में छोड़ना पड़ेगा।"
मोरेश्वर ने हाथ जोड़े और मूर्ति गायब हो गई।
अगले दिन मोरेश्वर पूरे दिन बाहर रहा। हनुमंत की मदद से उसने एक जीवित मुर्गा समुद्र में विसर्जित किया था। वह देर शाम घर लौटा। तब उसने देखा कि उसके पिता आज घर पर हैं। हमेशा की तरह, वह आज भी शराब पीने बाहर नहीं गए थे। "पापा, आप आज घर पर जिम नहीं गए।"
"नहीं, मोर्या, मुझे नहीं पता क्या हुआ, मरे हुए आदमी के मुंह में अब पानी नहीं आ रहा है, मैं अब शराब पीना छोड़ रहा हूँ।"

यह सुनकर मोरेश्वर बहुत प्रसन्न हुए। उनकी मनोकामना पूरी हो गई थी। अब मोरेश्वर को पूरा विश्वास हो गया था कि देत्तिदामिनी उनकी सभी मनोकामनाएं पूरी करेंगी। मोरेश्वर बेहद खुश थे।
इसके बाद, मोरेश्वर की कुछ और छोटी-बड़ी मनोकामनाएं पूरी हुईं। हर बार मोरेश्वर को समुद्र को कुछ न कुछ अर्पित करना पड़ता था।
मेरे पिता ने शराब पीना छोड़ दिया था, उन्होंने काम करना शुरू कर दिया था, मेरी बहन के ससुराल वालों ने पैसे मांगना बंद कर दिया था, वह अब सुखी जीवन जी रही थी, मेरे छोटे भाई की स्कूल फीस माफ हो गई थी। सब कुछ ठीक चल रहा था। उस दिन मोरेश्वर ने निश्चय किया कि आज वह कुछ बड़ा मांगेगा, भले ही यह उसकी आखिरी इच्छा हो, लेकिन अगर वह कुछ बड़ा मांगेगा तो उसका फल भी बड़ा ही मिलेगा। उसने काफी देर तक सोचा और तय किया कि उसे क्या मांगना है।
आधी रात हो चुकी थी, मोरेश्वर बिस्तर से उठे, घर में सब गहरी नींद में सो रहे थे, वे घर के पीछे आए, कुएँ के पास मूर्ति के सामने बैठ गए। उन्होंने मूर्ति के सामने दूध और चावल रखे और विधिपूर्वक अनुष्ठान किया, जिससे देत्तिदामिनी जाग उठीं।
अपनी अंतिम इच्छा व्यक्त करें।
"माका, मैं इस गांव का सबसे अमीर आदमी बनना चाहता हूं। मेरी इच्छा पूरी करो। मेरे घर को पैसों और सोने के सिक्कों से भर दो," मोरेश्वर ने कहा। "कल दोपहर ठीक बारह बजे समुद्र में जाल डालो, और तुम्हें जाल में सोने के सिक्कों से भरा एक बड़ा बर्तन मिलेगा।"
यह सुनकर मोरेश्वर प्रसन्न हो उठे, उनकी खुशी आसमान छू गई और उन्होंने आगे कहा, "देट्टी दामिनी।"
"इच्छा प्रबल है, प्रतिफल भी प्रबल है, कल ठीक बारह बजे एक जीवित पुरुष को समुद्र में बलि देना होगा।"
यह सुनकर मोरेश्वर के पैरों तले ज़मीन खिसक गई। जैसे ही वह कुछ कहने ही वाला था कि मूर्ति उसकी आँखों से ओझल हो गई। मोरेश्वर घर आकर पलंग पर लेट गया, उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। जैसा कि देत्तिदामिनी ने कहा था, उसे सोने के सिक्कों से भरा घड़ा तो मिल जाएगा, लेकिन जीवित पुरुष की बलि वह कहाँ देगा? मोरेश्वर पूरी रात यही सोचता रहा, उसे नींद नहीं आई; एक तरफ उसे सोने के सिक्कों से भरा घड़ा दिखाई दे रहा था और दूसरी तरफ वह भयानक दृश्य, मानव बलि।

अगली सुबह मोरेश्वर हनुमान के पास गया।
"हनामंता, दोपहर ठीक बारह बजे समुद्र में जाना एक बड़ा काम है।"
"अरे यार, समुद्र में तुम्हें क्या हो गया है?"
मैं तुम्हें सब कुछ बता दूंगा, लेकिन अभी नहीं, तुम्हें दोपहर बारह बजे पता चलेगा।
मोरेश्वर और हनुमंत दोनों नाव लेकर समुद्र में गहराई तक चले गए। ठीक बारह बजे, मोरेश्वर ने जाल समुद्र में फेंका। देखते ही देखते जाल भारी हो गया और मोरेश्वर ने उसे ऊपर खींच लिया। जाल में एक बड़ा बर्तन फंसा हुआ था। दोनों उसे देखकर आश्चर्यचकित रह गए।
मोरेश्वर ने घड़ा जाल से निकाला, उसका ढक्कन खोला और अंदर देखा। घड़ा सोने, चांदी, हीरे और मोतियों से भरा हुआ था। यह देखकर मोरेश्वर और हनुमंत की आंखें चमक उठीं।
"मोऱ्या अरे हे येवडो सोन चांदी"
"जी हां, हनुमंता, और मैं तुम्हें इसका एक चौथाई हिस्सा दूंगा।"
यह सुनकर हनुमान बहुत प्रसन्न हुए। उन्हें अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था।
"सच में, मोरा, तुम मुझे रोटी में मेरा हिस्सा देने वाली हो।"
"हां, लेकिन मुझे एक काम करना है, मुझे आज रात बारह बजे एक नाव लेकर समुद्र में आना होगा।"
बिना सोचे समझे हनुमान तुरंत तैयार हो गए।
दोनों समुद्र तट पर पहुंचे, चुपके से अपने साथ लाए हुए बर्तन को जंगल में ले गए, जहां मोरेश्वर ने उसका एक हिस्सा निकालकर कपड़े के थैले में बांध दिया और बाकी पैसे एक और मोटे बोरे में भर दिए।
"हानामंता, यह तुम्हारा हिस्सा है, लेकिन यह तुम्हें आज रात काम खत्म होने के बाद ही मिलेगा।"
"हां, मोर्या, यह काम करेगा," हनुमंत ने खुशी से कहा।
वे दोनों उस जगह से चले गए। हनुमंत को जरा भी अंदाजा नहीं था कि आज आधी रात को क्या होने वाला है।
मोरेश्वर चुपके से घर पहुंचा। यह सुनिश्चित करते हुए कि आसपास कोई नहीं है, वह पिछले दरवाजे पर आया और बड़े बोरे को कुएं में धकेल दिया। उसने हनुमान का हिस्सा अपने पास रख लिया।

मोरेश्वर ने दिन भर कुछ नहीं खाया था, लेकिन शाम को माँ के आग्रह पर उसने किसी तरह दो निवाले खा लिए। रात के दस बज चुके थे। ठीक साढ़े ग्यारह बजे मोरेश्वर की नींद खुली। वह पिछवाड़े गया, कुएँ के पास रखी मूर्ति उठाई और चल पड़ा।
हनुमान जी एक नाव लेकर समुद्र तट पर प्रतीक्षा कर रहे थे। मोरेश्वर वहाँ पहुँचे और दोनों नाव में बैठकर समुद्र में उतर गए। देखते ही देखते वे दूर समुद्र में उसी स्थान पर पहुँच गए जहाँ मोरेश्वर को मूर्ति मिली थी। मोरेश्वर मूर्ति को हाथ में लिए बैठे थे। अभी तक दोनों में से किसी ने एक शब्द भी नहीं बोला था। हनुमंत ने अपनी नाव को संभाला। मोरेश्वर खड़े हुए और हनुमंत का हिस्सा, जो उन्होंने अलग रखा था, उन्हें दे दिया।
"मित्र हनमंता, इस धन के बदले में डेटिडामिनी ने धन वापसी की मांग की है।" "वापसी... किस तरह की?" हनुमंत ने संदेह से कहा।
"पीड़ित, मानव बलि"
यह सुनकर हनुमान अपनी सीट से गिर पड़े।
"यह कैसा बलिदान है... मानव बलिदान"
"हां, हनामंता, डरो मत, आज मैं खुद को बलिदान कर दूंगी, मैं खुद को समुद्र में अर्पित कर दूंगी, लेकिन मैं घर पर किसी को इसके बारे में नहीं बताऊंगी, मैं समझती हूं, हनामंता।"
हनुमंत मोरेश्वर को देखता रहा। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या कहे। मोरेश्वर की मूर्ति को हाथ में लेकर वह एक कदम पीछे हटा, उसके पैर नाव के किनारे से टकराए और मोरेश्वर मूर्ति के साथ पानी में गिर गया।
हनुमान उस अथाह सागर में अपनी नाव में काफी देर तक सिर पकड़े बैठे रहे। दो दिन बीत गए, सुबह की कोमल किरणें समुद्र तट पर पड़ रही थीं। एक आदमी अपने कंधे पर मछली पकड़ने का जाल लिए समुद्र तट पर टहल रहा था। दूर से उसने देखा कि एक लड़का समुद्र के झागदार पानी में औंधा पड़ा है। वह दौड़कर उसके पास गया, औंधे मुंह पड़े लड़के को सीधा किया और देखा। वह मोरेश्वर था। मोरेश्वर जीवित था। मछुआरे ने कुछ अन्य लोगों की मदद से मोरेश्वर को उठाया और घर ले आया। दो दिन तक दवा लेने के बाद मोरेश्वर ठीक हो गया।
मोरेश्वर के घर में मातम छाया हुआ था, उसके माता-पिता, भाई और कुछ मेहमान घर पर जमा थे। दोपहर का समय था। घर में सन्नाटा पसरा हुआ था, तभी कोई अंदर

[illegible] [illegible] [illegible] [

अवरोध का कारण

शशांक ने जाने की सारी तैयारियाँ कर ली थीं। एक बड़ा बैग लेकर उसने कार की चाबियाँ उठाईं और घर से निकल गया। दोपहर के दो बज रहे थे। शशांक अपने ससुराल जा रहा था। उसकी पत्नी ने कल ही बच्चे को जन्म दिया था, उसका एक बेटा हुआ था।
उसे लगभग पाँच सौ किलोमीटर की दूरी तय करनी थी। वह जानता था कि वहाँ पहुँचते-पहुँचते रात हो जाएगी। उसने एक दिन पहले ही पेट्रोल भरवा लिया था। वह गाड़ी में बैठा और चाबी घुमाकर उसे स्टार्ट किया।
गाने सुनते हुए वह हाईवे पर धीरे-धीरे गाड़ी चला रहा था। मौसम ज़्यादा गर्म नहीं था, हल्की ठंडक थी, इसलिए उसने गाड़ी की खिड़की खुली रखी थी। गाड़ी धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। शशांक अब शहर से बाहर निकल चुका था। शाम के पाँच बज चुके थे। रास्ते में छोटे-बड़े गाँव दिखाई दे रहे थे। थोड़ी देर और गाड़ी चलाने के बाद वह चाय पीने के लिए एक छोटी सी दुकान पर रुका। वहाँ दो-तीन लोग चाय पी रहे थे।
"मुझे थोड़ी चाय दो," शशांक ने बेंच पर बैठते हुए कहा।
शशांक कुछ देर चुपचाप बैठकर चाय पीता रहा।
"पावना, तुम कहाँ जा रही हो?" बगल में बैठे किसी व्यक्ति ने पूछा।
"ह... मैं... मैं शिरधन जा रहा हूँ," शशांक ने कहा।
"शिर्धन... बहुत दूर है, एक काम करो... बाईं ओर वाले गांव में जाओ। सीधी सड़क पकड़ो, गांव के अंत में, मुरुंडी गांव की ओर जाओ, जब तुम मुरुंडी गांव पहुंचोगे, तो कोई तुम्हें शिर्धन जाने वाली सड़क बता देगा," उन्होंने कहा। "अरे, लेकिन यह रास्ता तो वहीं जाता है, तो मैं दूसरा रास्ता क्यों लूँ?" शशांक ने चाय का आखिरी घूंट खत्म करते हुए कहा।
“चलो पवन, अगर तुम इस रास्ते जाओगे तो दूरी 125 किलोमीटर कम हो जाएगी, अब किसी को परवाह नहीं, सड़क अच्छी है, क्यों नहीं राम्या?” उस आदमी ने बगल में खड़े दूसरे आदमी को कोहनी मारते हुए कहा। दूसरे आदमी ने भी थोड़ी हिचकिचाहट के साथ कहा, “क्यों नहीं... कोई बात नहीं, देर हो रही है, सड़क थोड़ी ऊबड़-खाबड़ है लेकिन दूरी 1 किलोमीटर कम हो जाएगी, ये तो सच है।” दोनों की बातचीत सुनकर शशांक थोड़ा सोचने लगा। उसने अपना मोबाइल निकाला और नक्शा खोलकर शिरधन जाने का रास्ता देखा। उसने देखा कि शिरधन जाने के दो

वैकल्पिक रास्ते हैं और दूसरे रास्ते से एक सौ दस किलोमीटर की दूरी कम हो जाएगी। यह देखकर शशांक बोला, "अरे वाह, मैं इस रास्ते से तो जल्दी पहुँच जाऊँगा, धन्यवाद दादा... शुक्रिया!" शशांक ने उस आदमी को धन्यवाद दिया और गाड़ी में बैठ गया।
शशांक के जाने के बाद, उन दोनों में से एक ने कहा, "क्या तुम अभी भी यहीं हो? तुमने उस आदमी को उस तरफ जाने के लिए क्यों कहा? क्या तुमने उसे यह नहीं बताया कि उसे ऐसा महसूस हो रहा था?"
"अरे, छोड़ो भी, ऐसी चीजों की वजह से हमारे गांवों की बदनामी होने लगी है, आखिर चल क्या रहा है?" उसने उसे चुप कराते हुए कहा।
'अर पार आज अवस है', उसने दूसरे अंदाज में खुद से कहा।
यहां शशांक ने अपनी कार दाईं ओर मोड़ी और दूसरा वैकल्पिक रास्ता ले लिया। शाम के 5:30 बज रहे थे। शशांक के मोबाइल में मैप ऐप खुला हुआ था, इसलिए उसे कार रोककर किसी से रास्ता पूछने की ज़रूरत नहीं पड़ी। शशांक मन ही मन बहुत खुश था क्योंकि वह जल्द ही अपनी पत्नी और बेटे के पास पहुँच जाएगा। एक घंटे और गाड़ी चलाने के बाद वह मुरुंडी गाँव पहुँच गया। चूंकि सर्दी का मौसम था, इसलिए सूरज जल्दी डूब गया था। वातावरण में अंधेरा छाने लगा था।
मुरुंडी गांव के मेहराब से दो अलग-अलग रास्ते निकलते थे। शशांक ने मेहराब के चारों ओर घूमकर दूसरा रास्ता लिया और आगे बढ़ गया। सड़क ज़्यादा लंबी तो नहीं थी, लेकिन ज़्यादा ऊबड़-खाबड़ भी नहीं थी। शशांक धीरे-धीरे गाड़ी चला रहा था। सड़क पर ज़्यादा ट्रैफिक नहीं था, चारों ओर बड़े-बड़े पेड़ और झाड़ियाँ थीं। जैसे-जैसे शशांक आगे बढ़ता गया, आसपास का इलाका घना होता गया। काफी देर तक शशांक को इस बात पर हैरानी होती रही कि उस सड़क पर उसे कोई दूसरी गाड़ी नहीं दिखी। शशांक ने पेट्रोल चेक किया, और गाड़ी में एक चौथाई पेट्रोल बचा था।
थोड़ी दूर गाड़ी चलाने के बाद, उसे सड़क के किनारे एक छोटी सी झोपड़ी दिखाई दी। सुनसान सड़क पर लंबे समय तक अकेले गाड़ी चलाने के बाद, शशांक को उस छोटी सी झोपड़ी को देखकर थोड़ी राहत मिली। उसने वहाँ थोड़ी देर रुकने का फैसला किया। शशांक झोपड़ी के पास पहुँचा और गाड़ी रोक दी। उसने गाड़ी से झोपड़ी पर नज़र डाली और निराश हो गया। वहाँ कोई नहीं था। शशांक गाड़ी से उतरा और झोपड़ी के पास गया। यह बहुत पुरानी झोपड़ी थी। चार बांस लगे थे और उस पर सूखी घास की छत थी और वह सामने से खुली थी। शशांक झोपड़ी के सामने

कमर पर दोनों हाथ रखकर खड़ा था। वह सोच रहा था कि इतनी सुनसान जगह पर यह झोपड़ी क्यों बनाई गई है। दूर-दूर तक कोई घर नज़र नहीं आ रहा था। उसकी नज़र आसानी से दाईं ओर गई और उसने देखा कि एक छोटा सा रास्ता अंदर की ओर जा रहा है। उसने उस रास्ते से नज़र हटाई और वह रास्ता घने जंगल में अंदर की ओर जा रहा था।
‘अंदर कोई बस्ती जरूर होगी, हमें आगे बढ़ना चाहिए,’ शशांक ने सोचा और पीछे मुड़ गया। जैसे ही वह गाड़ी का दरवाजा खोलकर अंदर बैठने वाला था, उसे सरसराहट की आवाज सुनाई दी, उसके बाद कदमों की आहट। वह हैरानी से पीछे मुड़ा। सामने फुटपाथ से कोई उसकी तरफ आ रहा था। वह एक औरत थी, और उस सुनसान जगह पर अंधेरी रात में उस औरत को देखकर शशांक थोड़ा घबरा गया। औरत हाथ में कपड़े का थैला लिए झोपड़ी के पास आई। उसने हरी साड़ी पहनी हुई थी। वह लगभग बीस साल की एक दुबली-पतली युवती थी। गेहूँ के रंग की, लंबी नाक वाली वह औरत शशांक को देखकर चौंक गई। उसने कपड़े का एक सिरा अपने कंधे से उतारकर अपने चेहरे पर रख लिया और उसे घूरने लगी। शशांक भी कुछ देर तक बिना कुछ बोले उसे देखता रहा।
“पवन कौन है?” उसने कहा।
“ओह… मैं… मैं शिरधन जा रहा हूँ, गाड़ी में पेट्रोल खत्म हो रहा है…”, शशांक कुछ और कहने ही वाला था कि महिला ज़ोर से हंस पड़ी और बोली, “अरे, मुझे लगा आप दूर वाले एकबी पंप पर जा रहे हैं।”
“लेकिन तुम यहाँ… इस जगह पर… मेरा मतलब है, इस सुनसान जगह पर, इस समय बिल्कुल अकेले क्यों हो?” शशांक ने चिढ़ाते हुए पूछा।
मैं… मैं अच्छाई के लिए जीता हूँ, मैं अच्छाई के लिए जीता हूँ, मेरा गाँव मेरे भीतर है।
शशांक को समझ नहीं आ रहा था कि आगे क्या कहे, इसलिए उसने कहा, "सायेब... मुझे तुम्हें कुछ बताना है।"
“हां हां, मुझे ना कहो”, शशांक ने कहा।
“काफी देर हो चुकी है, अगर आप और देर से जाओगे तो पेट्रोल नहीं मिलेगा, कहीं फंस जाओगे, फिर हमारे गांव में रात बितानी पड़ेगी... कल सुबह देर से आना... मेरे पति तुम्हारी मदद करेंगे”, उसने कहा।
शशांक सोच रहा था, 'यह महिला कहती है कि अगर मुझे भविष्य में पेट्रोल नहीं मिला तो बड़ा झगड़ा होगा, अगर भविष्य में कोई गांव मिल जाए तो ठीक है, वरना

नहीं', तभी महिला ने मुस्कुराते हुए झट से कहा, 'अरे, भविष्य में दूर-दूर तक कोई गांव नहीं है।'
बिना ज्यादा सोचे-समझे शशांक ने कहा, "आप जो कह रहे हैं वह सही है, लेकिन मैं आपके परिवार का इंतजार करूंगा।"
"अरे, इसकी चिंता मत करो, हमारे गांव में बहुत से लोग ऐसा महसूस करते हैं जैसे वे रास्ता भटक गए हों," उसने कहा।
“ठीक है, क्या हम कार से आपकी बस्ती तक जा सकते हैं?” शशांक ने पूछा।
"गाड़ी थकी नहीं, वह चलने लगी, सामने से जोर लगाते हुए," उसने कहा।
"ठीक है, मैं अपना बैग लेकर गाड़ी एक तरफ खड़ी कर देता हूँ," शशांक ने गाड़ी का दरवाज़ा खोलते हुए कहा। वह वहाँ अवाक, स्तब्ध खड़ी रह गई।
शशांक ने अपना बैग उठाया और उसके साथ संकरे रास्ते पर चलने लगा।
आस-पास छोटी-छोटी झाड़ियाँ और पेड़ थे। चारों ओर घना अंधेरा था। आसमान में चाँद का नामोनिशान नहीं था। उस भयावह इलाके में केवल महिला के कदमों की आहट सुनाई दे रही थी। शशांक को यह महसूस हो रहा था कि वह कुछ भी गलत नहीं कर रहा है। महिला बिना कुछ बोले तेज़ी से चल रही थी। शशांक उसके पीछे-पीछे चल रहा था।
थोड़ा आगे चलने पर उनके सामने एक छोटी सी धारा आ गई। धारा में उथला पानी बह रहा था। धारा पार करने के बाद, दोनों धीरे-धीरे पानी में चलने लगे। शशांक ने अपने पास रखी टॉर्च नीचे की और रोशनी में खुद को देखा। उसके सामने खड़ी महिला के पैर उल्टे थे। यह देखकर शशांक वहीं जम गया। उसका दिल ज़ोर से धड़क रहा था। उसका शरीर कांप रहा था, खड़े-खड़े ही उसे चक्कर आने लगा था। शशांक का पैर आगे नहीं बढ़ पा रहा था और उसी क्षण वह महिला भी रुक गई। उसने धीरे से अपना सिर पीछे की ओर घुमाया, शरीर को हिलाए बिना। उसका चेहरा पूरी तरह बदल चुका था। उसके चेहरे पर लाल और काली झुर्रियाँ थीं, उसकी आँखें पूरी तरह सफेद हो गई थीं।
शशांक के हाथ से टॉर्च गिर गई। उसका दिल बैठ गया, वह ज़ोर से चीखा, उसकी आँखें बंद हो गईं, उसे लगा जैसे वह गिर रहा हो और अचानक उसे किसी का स्पर्श महसूस हुआ। उसने आँखें खोलीं और देखा कि एक महिला ने उसे पकड़ लिया था।
उसका चेहरा बदल गया था।
"अरे, क्या हुआ, वर्दा? तुम क्यों डरी हुई हो?" उसने कहा।

उसके ठंडे स्पर्श से दूर हटते हुए शशांक ने फुसफुसाते हुए कहा, "अब तुम अलग दिख रही थी, तुम्हारे पैर उल्टे हो गए थे..."
“तुम मेरे बारे में क्या सोचते हो, मैं कितनी मूर्ख हूँ, हम गाँव के गरीब लोग हैं, चलो चलते हैं,” उसने शशांक का हाथ फिर से पकड़कर उसे आगे खींचते हुए कहा। शशांक ने संघर्ष किया और आगे बढ़ने लगा।
दोनों ने नाला पार किया और ऊपर आ गए। सामने एक छोटा कुआँ था, और उससे पचास कदम आगे एक छोटा सा घर दिखाई दे रहा था। दिघे भी आगे बढ़ी। महिला ने घर का दरवाजा खोला। अंदर, बीच में एक छोटा सा दीपक रखा था। उसने शशांक के बैठने के लिए एक कंबल बिछाया। शशांक चुपचाप बैठ गया। उसने शशांक को पानी पिलाया। "नहीं, मेरे पास पानी है," शशांक ने इधर-उधर देखते हुए कहा और एक पल के लिए उसे एहसास हुआ कि उसका बैग उसके पास नहीं है। उसके पास टॉर्च या मोबाइल फोन भी नहीं था।
"हे भगवान, क्या मेरा बैग उस नाले में गिर गया? मेरे पास मेरा मोबाइल फोन भी नहीं है," शशांक उठते हुए बोला।
"बैठ जाइए साहब, मैं कल सुबह थैला ले आऊंगी, अभी वहां मत जाइए, वह सुनसान जगह है," उसने हंसते हुए कहा।
"मेरा मतलब है, तुम किस बारे में बात कर रहे हो, तुम मुझे अभी-अभी उस जगह से लाए हो," शशांक की आवाज ऊंची हो गई।
"गुस्सा मत होइए, साहब, वह जगह अकेले व्यक्ति के लिए किसी बुरे सपने से कम नहीं है, आप वहां क्या देख सकते हैं?" उसने गंभीर स्वर में कहा।
"तो फिर तुम दोनों मेरे साथ आओ," शशांक ने हिचकिचाते हुए कहा।
"अगर तुम ऐसा कहती हो, तो चलो तुम्हारा बैग ले आते हैं," उसने ठंडी आवाज में कहा।
दोनों घर से बाहर निकले। उन्हें रात के समय का कोई अंदाजा नहीं था। इसी बीच खर्राटे की आवाज सुनाई दी। महिला आगे चल रही थी। कुआँ पार करने के बाद दोनों एक नाले के पास पहुँचे। शशांक नाले में उतरने लगा। उसने अपने सामने कुछ पड़ा हुआ देखा। घोर अंधेरे में वह कुछ भी समझ नहीं पा रहा था। शशांक उथले पानी में लड़खड़ाते हुए आगे बढ़ा और अपने सामने पड़ी चीज को देखकर दंग रह गया।

[illegible]

एक गुड़िया, एक गुड़िया।

अगर कोई आपसे कहता है कि कुछ बुरा होने वाला है या यहाँ कुछ भयानक हो रहा है, यहाँ बदबू आ रही है, वहाँ कोई हिल रहा है, तो आप केवल वहाँ बुरी चीजों की तलाश करते हैं और आपको भयानक अनुभव होते हैं।
पंकज अंधविश्वासों, भूतों और प्रेतों से बहुत नाराज़ था। उसके अनुसार, ये सब कहानियाँ या मनगढ़ंत बातें थीं, जो मूर्ख लोगों ने लोगों को बेवकूफ बनाने के लिए गढ़ी थीं। पंकज काफी पढ़ा-लिखा था। वह अपना काफी समय मोबाइल और लैपटॉप पर पढ़ने में बिताता था। एक बार लैपटॉप पर कुछ खोजते समय, उसे एक फोरम का लिंक दिखा। उस फोरम का नाम भयानुभव था। उसने तुरंत उस लिंक पर क्लिक किया और फोरम खोल लिया।
उस फोरम पर कई लोगों ने अपने भयानक अनुभवों के बारे में लिखा था। वहां हजारों लिंक उपलब्ध थे। पंकज ने हर लिंक खोला और पढ़ना शुरू किया।
एक असंतुष्ट आत्मा के साथ नए घर में प्रवेश करने वाले दंपत्ति का अनुभव, एक प्रेतवाधित गुड़िया का अनुभव, प्रेतबाधित लोगों का अनुभव, और कई अन्य लोगों ने कुछ उपाय, तकनीकें और मंत्र भी लिख रखे थे। पंकज ने ऐसी कई बातें और अनुभव पढ़े। कुछ अनुभवों और उपायों को पढ़ने के बाद, वह जोर से हंसते हुए बैठ गया। वह काफी देर से पढ़ रहा था, आधी रात हो चुकी थी। पंकज ने अपना लैपटॉप बंद किया और सोने चला गया।
पंकज बिस्तर पर लेटा हुआ सोच रहा था।
दुनिया में कितने अंधविश्वास हैं! अमावस्या के दिन नींबू के पेड़ पर इक्कीस कांटों से छेदा हुआ नींबू लटका दो और ठीक इक्कीस घंटे में वो नींबू तुम्हारी सारी परेशानियां दूर कर देगा। और क्या… हा… ब्लैकबोर्ड पर दो वर्ग बनाओ, उसमें ज्वार का आटा डालो और उसे बुलाओ… उस पर क्या नाम लिखा था… हा… ज़ाखर… फिर उसे ज़ाखर बुलाओ… वो आएगा और तुम्हारे सारे सवालों के जवाब देगा… हा हा… इन लोगों को क्या सुझाव दें… सोचते-सोचते पंकज के दिमाग में एक विचार आया, चलो हम भी ऐसा ही कोई अनुभव और उसका हल इस फोरम पर पोस्ट कर देते हैं… चलो ऐसा ही करते हैं, देखते हैं लोगों की क्या प्रतिक्रिया होती है। पंकज ने इस बारे में काफी देर तक सोचा और सो गया।

हे भगवान, कितनी भयानक चीजें हैं... (पंकज लिखते समय मन ही मन हंस रहा था) फिर हमने उससे पूछने के लिए तीन सवाल तैयार किए। वे मेरे बारे में बहुत ही सरल सवाल थे। उस रात वह अपनी उस खास सीटी के साथ आया। वह मेरे पास आया और बोला, 'तुम मुझसे क्या पूछना चाहते हो?' तब मैंने बिना किसी डर के उससे एक-एक करके तीनों सवाल पूछे, उसने जवाब दिए और वहाँ से चला गया। मैंने उसे फिर कभी नहीं देखा। दोस्तों, आप जानते हैं कि मैंने उससे आखिरी सवाल पूछा था, 'वह लॉटरी नंबर क्या है जिससे पाँच लाख रुपये जीते जाएँगे?' आप विश्वास नहीं करेंगे, उसने जो नंबर बताया उसने मेरी जिंदगी बदल दी। उसके बाद हम फिर से मेरी पत्नी के चाचा से मिले और उन्हें सारी सच्चाई बताई। मैंने उनसे पूछा कि अगर मैं उस आदमी को दोबारा बुलाना चाहूँ तो क्या रस्में हैं, तो वे जोर से हँसे और बोले, 'यह कोई मजाक नहीं है, मेरे बेटे, तुम बच गए, तुम्हें इसके लिए शुक्रगुजार होना चाहिए।' लेकिन मैं भी गुस्से में था। मैंने उन्हें एक लाख रुपये की रिश्वत देने की पेशकश की, लेकिन उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया, लेकिन मेरी जिद देखकर उन्होंने मुझे रस्म बताई।
यह अनुष्ठान अमावस्या के दिन या उसके बाद के पांच दिनों में ठीक बारह बजे आधी रात को किया जा सकता है।
आप एक साधारण कपड़े की गुड़िया लेंगे। एक ऐसी गुड़िया जिसके हाथ, पैर, आंखें, नाक और मुंह बिल्कुल सही आकार के हों। अगर आप उसे खुद बनाएं तो और भी अच्छा होगा। आप अपने कटे हुए नाखूनों की माला को धागे से बांधकर गुड़िया के गले में डालेंगे। फिर आप अपने दाहिने अंगूठे से निकला खून गुड़िया के माथे पर लगाएंगे।
आपको नमक का एक घेरा बनाना है और उसमें गुड़िया रखनी है। फिर, गुड़िया की छाती पर हाथ रखकर उसे पुकारना शुरू करें। थोड़ी देर बाद, आपको उसे तीन बार पुकारना है। यदि आप सब कुछ सही ढंग से करते हैं, तो तीसरी बार पुकारने के बाद, आपको अपने हाथ के नीचे गुड़िया हिलती हुई महसूस होगी और थोड़ी देर बाद आपको सीटी की आवाज़ सुनाई देगी। इसका मतलब है कि अंजक आप तक पहुँच गया है। याद रखें, अंजक से पूछने के लिए तीन प्रश्नों की एक सूची पहले से तैयार कर लें। तीनों प्रश्न पूछे जाने तक गुड़िया को नमक के घेरे में ही रखना है। मान लीजिए, किसी कारणवश, अनुष्ठान ठीक से नहीं संपन्न होता है, तो इनमें से कुछ भी नहीं होगा और जब गुड़िया हानिरहित साबित हो जाती है, तो उसे फेंक देना ठीक है।

मान लीजिए कि अंजक जाग जाता है और आप उससे कोई सवाल नहीं पूछते हैं, तो वह हर रात आधी रात के बाद आपके सामने प्रकट होगा और कहेगा, "मुझे आश्चर्य है कि आप क्या पूछना चाहते हैं।"
मान लीजिए कि आप उससे तीन प्रश्न पूछते हैं और वह फिर भी आपको दिखाई देता है, लेकिन आप बड़ी मुसीबत में हैं, तो बिना डरे, निम्नलिखित मंत्र का तीन बार जाप करें...
‘हे प्रभु, असीम महिमा के प्रभु… अजेय और अपराजेय प्रभु’
ऐसा करने से अंजन अपने मालिक के पास लौट आएगा और आप बच जाएंगे।
यह सब लिखने के बाद पंकज ने अपना पोस्ट फोरम पर प्रकाशित किया। आधी रात हो चुकी थी। पंकज हंसते-हंसते सो गया।
अगले दिन, खाना खाने के बाद, पंकज ने फोरम पर अपनी पोस्ट देखी। उसकी पोस्ट पर दो टिप्पणियाँ थीं।
उनमें से एक ने लिखा, 'बापारे, यह बहुत डरावना अनुभव है, लेकिन मुझे बताइए, जिस अनुष्ठान के लिए आप एक लाख रुपये देने को तैयार थे, उसे आपने इस मंच पर मुफ्त में क्यों साझा किया?' इस पर पंकज ने लिखा, 'मैं देखना चाहता हूं, किसमें इतना साहस है कि वह ऐसा अनुभव करे?'
एक अन्य व्यक्ति ने लिखा था, 'यह कितनी बेवकूफी भरी और हास्यास्पद बात है।' पंकज उस टिप्पणी को पढ़कर दिल खोलकर हँस पड़ा। वह लिखना चाहता था, 'तुम बिल्कुल सही हो, दोस्त,' लेकिन उसने नहीं लिखा।
कुछ और दिन बीत गए, पंकज रोज़ फोरम पर टिप्पणियाँ पढ़ता रहा। दिन-ब-दिन उसकी पोस्ट लोकप्रिय होती गई, कई लोगों ने उस पर टिप्पणी की। अधिकतर लोगों को पंकज की टिप्पणी बिल्कुल सही लगी, पंकज को यह बहुत मज़ेदार लगा।
उस दिन अमावस्या थी। रात के ग्यारह बज रहे थे। पंकज हमेशा की तरह सज-धज कर अपने लैपटॉप के साथ बैठा था। उसने फोरम का लिंक खोला और अपनी पोस्ट देखी। आज उसकी पोस्ट पर आई एक नई टिप्पणी ने उसका ध्यान खींचा।
एक लड़की ने कमेंट लिखा, 'मैं आज यह रस्म निभाने जा रही हूँ, मैं पिछले दो- तीन दिनों से इसकी तैयारी कर रही हूँ, गुड़िया और बाकी सारी चीज़ें तैयार हैं, कल मैं आपको विस्तार से बताऊँगी कि क्या हुआ।' पंकज यह कमेंट देखकर खूब हँसा। लगभग आधी रात हो चुकी थी। पंकज ने अपना लैपटॉप बंद किया और सोने चला गया। उसे काफी देर तक नींद नहीं आई, उसके मन में कुछ अजीब से ख्याल आ

फेंकने के लिए मुड़ी तो देखा कि वह अपनी जगह पर नहीं थी… यह देखकर मैं डर गई, लेकिन मुझे आपका बताया हुआ मंत्र याद आ गया और मैंने उसे तीन बार दोहराया… अभी तक कुछ भी बुरा नहीं हुआ है… धन्यवाद।’
पंकज का दिल उसकी प्रतिक्रिया पढ़ते ही तेजी से धड़कने लगा।
उनकी पोस्ट पर कई और लोगों ने नई टिप्पणियां कीं, जिनमें उन्होंने अनुष्ठान करने या उसे करवाए जाने के अपने अनुभवों के बारे में लिखा।
एक व्यक्ति ने तो यहाँ तक लिखा, 'बहुत-बहुत धन्यवाद, मैंने निर्देशानुसार सभी अनुष्ठान किए... अंजक जाग गया, मैंने उससे तीन सवाल पूछे...'
एक व्यक्ति ने लिखा, 'क्षमा करें, लेकिन अनुष्ठान करते समय मुझसे कुछ गलती हो गई होगी। दो बार पुकारने के बाद, मुझे तुरंत अपने हाथ में गुड़िया हिलती हुई महसूस हुई, इसलिए मैंने तीसरी बार पुकारे बिना अपना हाथ हटा लिया और देखिए, गुड़िया वहां से गायब हो गई थी... श्रीमान पी, कृपया मुझे बताएं कि अब मुझे आगे क्या करना चाहिए।'
कुछ और पढ़े बिना पंकज ने लैपटॉप बंद कर दिया और सिर हाथों में थामकर बैठ गया। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। उसे यह भी नहीं पता था कि वह जो पढ़ रहा है वह सच है या सिर्फ़ बकवास। उसका दिमाग अचानक उलट-पुलट हो गया था।
घड़ी की टिक-टिक चल रही थी। आधी रात करीब आ रही थी। रात के बारह बज चुके थे। पंकज एक कोने में घुटनों में मुंह छिपाए बैठा था। अचानक उसे एक सीटी की आवाज़ सुनाई दी, एक बार, दो बार या तीन बार। पंकज ने सिर उठाया और उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। एक नहीं, दो नहीं, बल्कि कई छोटी-बड़ी गुड़िया उसके सामने खड़ी थीं। वे सरसराती हुई आगे बढ़ीं और पंकज की ओर चलने लगीं। सारी गुड़िया पंकज के चारों ओर जमा हो गईं और बोलीं, 'तुम मुझसे क्या पूछना चाहते हो?' काफी देर तक वह पतली, कर्कश आवाज़ कमरे में गूंजती रही। पंकज वहीं बैठ गया। उसे चक्कर आने लगा, उसका दिमाग धीरे-धीरे बेहोश हो रहा था। किसी ने उसकी गर्दन को हल्के से छुआ और पंकज की मृत्यु हो गई।
पंकज ने अपनी पोस्ट में लिखा था कि गुड़िया से छुटकारा पाने के लिए मंत्र का तीन बार जाप करें ताकि गुड़िया अपने मालिक के पास चली जाए, लेकिन उन्होंने यह नहीं लिखा था और न ही इस बारे में सोचा था कि उसके मालिक उससे कैसे छुटकारा पा सकते हैं।

कामिनी

किसान भेड़ों के साथ घर लौट रहा था। शाम के साढ़े छह बज चुके थे। सूरज की नारंगी किरणें अब फीकी पड़ चुकी थीं और अंधेरा छाने लगा था। किसान तेज़ी से नीचे उतरते हुए एक छोटी पहाड़ी की तलहटी पर पहुँचा। पास ही एक कब्रिस्तान था, चारों ओर बांसों से बना एक छोटा सा कब्रिस्तान।
कल जलाई गई चिता के कुछ अवशेष अभी भी दिखाई दे रहे थे। जली हुई लकड़ी की काली राख चारों ओर फैली हुई थी।
किसान आगे बढ़ा और इलाके का चक्कर लगाते हुए पीछे से सरसराहट की आवाज सुनी।
किसान चौंक गया, उसने पीछे मुड़कर देखा। उसके पीछे कोई नहीं था। हवा का एक झोंका आया और कब्रिस्तान की काली राख हवा में उड़ गई। किसान को लगा मानो उस राख से कोई आकृति बन गई हो। वह डरे हुए चेहरे से आगे देखता रहा। हवा में उड़ती काली राख धीरे-धीरे ज़मीन पर वापस जम रही थी। होश में आकर किसान जल्दी से पीछे मुड़ा और भेड़ों को पुकारते हुए आगे बढ़ने लगा। तब तक सूरज पहाड़ों के पीछे डूब चुका था। गाँव अभी भी एक मील दूर था। अंधेरा छाने लगा था।
किसान एक बहादुर युवक था, लेकिन उसके मन में एक अनजाना डर लगातार घर कर रहा था। क्योंकि कल ही गांव के अंबदास का देहांत हो गया था। अंबदास का विवाह छह महीने पहले हुआ था। विवाह के बाद से ही उसकी पत्नी से झगड़े होते रहते थे, उसे उसके चरित्र पर संदेह था। अंबदास की मृत्यु से एक दिन पहले उसकी पत्नी कामिनी अचानक गायब हो गई थी और घर में एक पत्र मिला था। उस पत्र में लिखा था कि वह अपने प्रेमी के साथ भाग गई है। इससे अंबदास बहुत दुखी हुआ।
अगली ही रात, अंबादास अचानक अस्वस्थ महसूस करने लगे और उन्हें खून की उल्टी होने लगी। अस्पताल ले जाने से पहले ही उनकी मृत्यु हो गई।
किसान पूरी रफ्तार से चल रहा था। भेड़ों की आवाज़ सुनकर वह पीछे मुड़े बिना आगे बढ़ता जा रहा था। कोई उसका पीछा कर रहा था। तभी दूर से किसी के गुर्राने की आवाज़ आई और डर की लहर किसान के शरीर में दौड़ गई। किसान आधा मील का सफर तय कर चुका था। दूर गाँव के घरों की कतार दिखाई दे रही थी, जिनमें पीली और सफेद बत्तियाँ जगमगा रही थीं।

सड़क पर कोई और नहीं था, किसान ने ऊपर देखा, आसमान घोर काला था। उसके पीछे जो भी चल रहा था, उसकी गति बढ़ गई थी, और पलक झपकते ही वह पीछे से आया और किसान पर झपटा। किसान को चीखने का भी समय नहीं मिला।
आधी रात हो चुकी थी। अंबदास के घर में सब लोग चैन से सो रहे थे। अचानक दरवाजे पर दस्तक हुई। एक बार, दो बार, तीन बार, लेकिन किसी ने दरवाजा नहीं खोला। तभी दरवाजे पर ज़ोरदार दस्तक हुई। अंबदास का भाई हरिदास चौंककर जाग गया। वह जागा, और तब तक उसकी पत्नी और माता भी जाग चुकी थीं।
हरिदास दरवाजे के पास पहुंचा, दरवाजे पर दस्तक हो रही थी। हरिदास ने कुंडी हटाई और दरवाजा अंदर की ओर खींचकर खोला। किसान बाहर खड़ा था।
"क्या बकवास है, किसान्या, तुम इतनी रात को क्यों आए हो?" हरिदास ने झुंझलाहट से पूछा।
"अरे, तुम कितनी शांति से सो रहे हो, अंबादास की पत्नी वहां लेटी हुई है," किसान ने कहा।
यह सुनकर हरिदास के कान गर्म हो गए और हरिदास ने धीमी आवाज़ में कहा, "क्या पागलपन है, किसान्या, क्या तुम रोने लगे हो? तुम्हें रोए हुए कितना समय हो गया है? अगर तुम आए हो तो यहीं मर जाओगे। मेरा भाई मर चुका है।"
"तो क्या तुम्हारा खून नहीं खौल रहा? आलिया, उसे पकड़ो और हिलाओ।" किसान की आँखें चौड़ी हो गईं, उसकी सूखी आँखों में एक अलग ही चमक दिखाई दी।
"और तुम्हें क्या हुआ है? घर जाओ और चैन से सो जाओ," हरिदास ने चिढ़ाते हुए कहा।
छह फुट लंबे किसान ने आगे झुकते हुए, आंखें चौड़ी करते हुए कहा, "वह जानती है कि अंबदास की मृत्यु कैसे हुई।"
हरिदास के भावहीन चेहरे को देखकर, वह कुछ भी कहने में असमर्थ होकर गहरी साँस लेते हुए दरवाजे से बाहर आ गया। उसकी माँ और पत्नी अंदर से बातचीत सुन रही थीं, लेकिन दोनों चुपचाप अंदर बैठी रहीं।
हरिदास ने अपने पीछे दरवाजा बंद कर दिया।
"जल्दी मेरे साथ आओ," किसान ने हरिदास का हाथ खींचते हुए कहा।
आधे मिनट बाद हरिदास किसान के साथ चलने लगा। दोनों तेज़ी से गाँव के द्वार की ओर बढ़े, मकानों की कतार पीछे छूटती गई और सामने छोटा सा कब्रिस्तान दिखाई देने लगा। हरिदास का दिल तेज़ी से धड़क रहा था।

"अरे किसान्या, मुझे कहाँ ले जा रहे हो?" हरिदास ने कहा, तभी किसान ने उसका हाथ और कसकर पकड़ लिया।
हरिदास को कुछ अजीब लगा। उसने अपना हाथ ज़ोर से झटकना शुरू किया, लेकिन किसान ने उसे आगे खींच लिया। किसान की मज़बूत पकड़ से निकलना उसके लिए नामुमकिन था।
श्मशान घाट के सामने, किसान ने हरिदास को ज़मीन पर धक्का दिया। हरिदास घबराया हुआ था, उठने की कोशिश कर रहा था और अब पहली बार उसने किसान का चेहरा ठीक से देखा। किसान की आँखें लाल थीं। धुंधली रोशनी में उसका चेहरा भयानक लग रहा था। वह हरिदास को दाँत दिखाते हुए घूर रहा था। यह देखकर हरिदास भयभीत हो गया। उसका दिल ढोल की तरह धड़कने लगा। उसके हाथ-पैर काँपने लगे। हरिदास समझ गया कि यही उसका अंत है।
अगले ही पल, किसान हरिदास पर झपटा और आकाश में एक भयानक चीख गूंज उठी। हरिदास की मां और पत्नी घर पर उसका इंतजार कर रही थीं। रात के एक बज चुके थे।
जैसे ही दरवाजे पर दस्तक हुई, हरिदास की पत्नी दौड़कर दरवाजा खोलने गई, उसके पीछे हरिदास की मां भी थी। किसान दरवाजे पर खड़ा था।
हरिदास की पत्नी ने पूछा, "मेरे स्वामी किसान्य कहाँ हैं?"
कर्कश आवाज में हंसते हुए किसान ने कहा, "अच्छे अर्थ में।" इतना कहते ही वह और जोर से हंसने लगा।
हरिदास का अजीबोगरीब, काला चेहरा देखकर उसकी पत्नी और माता भयभीत हो गईं।
दोनों ने दरवाजा बंद करने की कोशिश की, लेकिन किसान अंदर आ गया और उसे जोर से लात मारी। किसान के हाथ में अब कुल्हाड़ी थी।
दोनों ठोकर खाकर गिर पड़े। जैसे ही उन्होंने चीखने की कोशिश की, किसान ने अपनी कुल्हाड़ी उठाई और दोनों को चुप करा दिया।
"क्या... क्या... किसान्या, हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था, तुमने हमारी जान क्यों ले ली?" हरिदास की माँ ने कहा।
"मैं किसान नहीं हूँ," किसान के मुँह से एक अलग लेकिन जानी-पहचानी आवाज़ आई, और दोनों ने अपना सिर घुमाया।
"मैं… कामिनी… माँ हूँ," किसान के मुँह से फिर से आवाज़ आई।

जैसे ही दोनों कुछ कहने ही वाले थे कि किसान अचानक आगे आया और हरिदास की पत्नी के सिर पर कुल्हाड़ी से वार कर दिया। वार इतना तेज और जोरदार था कि उसे चीखने का भी समय नहीं मिला।
वह ज़मीन पर गिर पड़ी, उसके सिर में घुसी कुल्हाड़ी अभी भी उसके हाथ में थी। हरिदास की माँ, जो एक तरफ बैठी थी, उसे बड़ी-बड़ी आँखों से देखती रही। उसके गले से अब केवल गुनगुनी आवाज़ निकल रही थी। उसका शरीर सुन्न पड़ गया था।
"अंबादास कहाँ है... माँ?", कामिनी ने किसान के मुख से कहा।
एक गहरी सांस लेते हुए उसने अपना सिर किसान की ओर घुमाया। किसान की आंखें लाल थीं।
"क्यों... कामिनी, मुझे माफ कर दो," उसने हाथ जोड़ते हुए कहा।
"अंबादास कहाँ है... माँ?" कामिनी ने कर्कश और तेज़ आवाज़ में कहा।
"मुझे नहीं पता था, मुझे नहीं पता था, कृपया मेरे बेटे को माफ कर दीजिए, मैं उसे नहीं मारूंगी," मां ने हाथ जोड़ते हुए कहा।
क्रोधित होकर किसान ने अपने सिर में धंसी हुई कुल्हाड़ी को बाहर निकाल लिया, जिससे पूरे घर में खून फैल गया।
"छत पर, गणपति के घर में, हाय अंबदास," मां ने बेहद भयभीत होकर कहा।
"आपने मेरी अंतिम मृत्युशय्या पर मुझे बचाने का प्रयास किया, इसलिए मैं आपको एक जीत का तोहफा दे रहा हूं," किसान ने वहां से उठते हुए और घर से निकलते हुए कहा।
कल कुछ ऐसा ही हुआ था...
अंबादास और कामिनी के बीच झगड़ा हो गया। अंबादास कामिनी को लगातार अपशब्द कह रहा था और उसके चरित्र पर कटाक्ष कर रहा था। वह उसके माता-पिता का भी अपमान कर रहा था। कामिनी को यह सब असहनीय लगा और वह क्रोधित हो गई। गुस्से में आकर उसने कुछ ऐसा कह दिया कि अंबादास का सारा गुस्सा फूट पड़ा। उसने कामिनी को पीटना शुरू कर दिया।
उनके भाई हरिदास, भाभी और माता घर पर थे, लेकिन तीनों ने अंबदास का समर्थन किया।
झगड़ा तब शुरू हुआ जब अंबादास ने कामिनी के पिता से पैसों की मांग की। अंबादास को शादी में बड़ी दहेज राशि मिली थी। लेकिन एक महीने के भीतर ही उसने सारा पैसा जुए और शराब में उड़ा दिया। इसके बाद वह कामिनी से लगातार

पैसे मांगता रहा, लेकिन कामिनी ने उसे कुछ नहीं दिया। अंबादास का भाई, भाभी और मां भी उसके साथ मिल गए, जिसके कारण कामिनी को घर में परेशान किया जाने लगा।
लेकिन कल कामिनी को यह सब असहनीय लगा और उसने विरोध किया, पर परिणाम उल्टा हुआ। क्रोध में आकर अंबदास ने कामिनी का गला घोंट दिया। कामिनी उसकी बाहों में तड़प रही थी। एक तरफ उसका भाई हरिदास और भाभी उत्सुकता से यह सब देख रहे थे।
कामिनी के हाथ-पैर धीरे-धीरे सुन्न पड़ रहे थे, उसकी दृष्टि धुंधली होती जा रही थी। अंबदास की माँ आगे आई और उसे रोकने की कोशिश की, लेकिन वह असफल रही। कामिनी का देहांत हो गया।
अब सवाल यह था कि कामिनी के शव का अंतिम संस्कार कैसे किया जाए।
"जैसा मैं कहूँ वैसा करो, अंबदास," हरिदास ने कहा।
"एक पत्र लिखो जिसमें लिखा हो कि कामिनी अपने प्रेमी के साथ भाग गई है, पूरा गांव इस बात से पागल हो जाएगा कि तुम्हारी पत्नी भाग गई है, शाम को तुम अचानक बीमार पड़ जाओगे, खून की उल्टी करोगे, मैं और गणपत तुम्हें तालुका ले जाएंगे और मुझे लगता है कि तुम या तो ठीक हो जाओगे या बुरी तरह प्रभावित हो जाओगे, वापस आते समय वेसी के पास श्मशान घाट में तुम्हारा अंतिम संस्कार कर दिया जाएगा, याद है?" हरिदास ने कहा।
"अगर मेरी मृत्यु हो गई, तो मुझे गांव छोड़ना पड़ेगा," अंबादास ने कहा। "देखो, तुमने अंबादासा को मारकर बहुत बड़ी गड़बड़ कर दी है। अब, अगर तुम इस गड़बड़ से सुरक्षित निकलना चाहते हो, तो तुम्हें गाँव छोड़ना होगा। देखते हैं हम क्या कर सकते हैं," हरिदास ने कहा।
अंबादास ने एक पल सोचा और उसके चेहरे पर एक क्रूर मुस्कान फैल गई। सारी घटनाएँ योजना के अनुसार घटीं। पूरे गाँव में यह खबर फैल गई कि अंबादास की पत्नी भाग गई है और उसके जाने से अंबादास बीमार पड़ गया। रात में, हरिदास और उसका दोस्त अंबादास को तालुका ले गए। कामिनी के शव को बैलगाड़ी में सावधानीपूर्वक छिपा दिया गया। हरिदास का दोस्त गाँव के द्वार से गाँव में आया और उसने अंबादास की मृत्यु की खबर दी।
गांव के कुछ लोगों की मौजूदगी में शव का अंतिम संस्कार छोटे कब्रिस्तान में किया गया। चिता जल उठी, लेकिन वह कामिनी की थी। अंबदास बाग में बने घर में छिपा हुआ था।

रात के दो बज चुके थे। अंबदास और गणपत पहाड़ी पर बने उस घर में सो रहे थे। रात के पतंगे धीरे-धीरे चहचहाना शुरू कर रहे थे। घर में एक पुराना पीला दीपक जल रहा था।
अंबादास ने अपना पलंग बदला। दीपक की रोशनी से उसकी नींद खुल गई। उसने कंपकंपी से आंखें खोलीं और देखा कि किसान उसके सामने बैठा है। उसे देखकर अंबादास चौंक गया। उसकी नज़र एक तरफ रखी खून से सनी कुल्हाड़ी पर पड़ी और उसका दिल ज़ोर से धड़कने लगा। वह सीधा बैठ गया। उस आवाज़ से गणपत भी चौंक गया और आंखें मलते हुए जाग उठा।
"किसान्या, तुम यहाँ क्या कर रहे हो?" अंबदास ने चिढ़ाते हुए कहा।
लेकिन किसान उसे घूर रहा था। जैसे ही अंबदास उठने लगा, किसान ने अपनी कुल्हाड़ी उठा ली जिसे उसने एक तरफ रख दिया था, और अंबदास वापस बैठ गया।
गणपत किसन को डाँटता हुआ उठा।
“क्या बात है, किसान्या? क्या तुम यहाँ भेड़ मारने आए हो? तुम्हारे आने का क्या मकसद है?” गणपत आगे बढ़ते हुए बोला, लेकिन किसान अंबादास को घूर रहा था।
"अरे, हितन उठो!" गणपत आगे आया और किसान की दरांती छीन ली, जिससे किसान जाग गया। उसकी आँखों में आग सी धधक रही थी।
गणपत ने किसान को धक्का देकर पीछे धकेल दिया, और अगले ही पल उसके हाथ में मौजूद खून से सनी कुल्हाड़ी बिजली की गति से गणपत की छतरी पर जा लगी। गणपत के गिरते ही किसान ने कुल्हाड़ी वापस खींच ली। खून की बौछार पूरे घर में फैल गई।
यह सब अंबादास के लिए पूरी तरह से अप्रत्याशित था, जो वहां एक मूर्ति की तरह बैठे हुए यह सब देख रहे थे।
"मैं परेशान नहीं होना चाहती, स्वामी जी," कामिनी की आवाज किसान के मुंह से निकली और अंबदास ने उसे बड़ी-बड़ी आंखों से देखा।
"मैंने ऐसा कौन सा अपराध किया था कि तुमने मुझे मार डाला?" किसान ने पूछा। "क्यों... कामिनी, कृपया मुझे माफ कर दो, कामिनी... कृपया मुझे माफ कर दो," अंबादास ने हाथ जोड़कर रोते हुए कहा।
"मैं आपको लेने आया हूँ, मेरे स्वामी, मैं आपके बिना एक दिन भी नहीं रह सकता," किसान ने आगे बढ़ते हुए अपने हाथ में पकड़ी कुल्हाड़ी पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली।

जैसे ही अंबादास कुछ और कहने ही वाले थे कि उन्हें गर्दन पर जोरदार प्रहार हुआ और उनका सिर धड़ से अलग हो गया।

दिल

कोल्हापुर का एक छोटा सा गाँव खमरगाँव। इस गाँव में हर साल जनवरी महीने में उरुस उत्सव मनाया जाता था। गाँव के लोग उरुस उत्सव के लिए अपने रिश्तेदारों और दोस्तों को आमंत्रित करते थे और लोग गाँव में भोजन करने आते थे।
उरुसा के दूसरे दिन, गाँव के लोग देवी के दर्शन और आशीर्वाद लेने के लिए मंदिर में उमड़ पड़ते थे। देवी का मंदिर गाँव से लगभग दो किलोमीटर दूर था। वहाँ तक लगभग डेढ़ किलोमीटर कच्ची सड़क थी, लेकिन उसके बाद रास्ता खेत में बदल जाता था और लोगों को खेत के रास्ते से होकर जाना पड़ता था। इस रास्ते पर, जहाँ कच्ची सड़क खत्म होती थी, वहाँ एक पुराना जर्जर मकान था। उस विशाल क्षेत्र में वही एक मकान था। लोग उस जगह से लंबे समय से डरते थे, क्योंकि वह एक भूतिया मकान माना जाता था। कई लोगों ने वहाँ अजीब अनुभव किए थे। कभी किसी ने सफेद साड़ी पहनी महिला को देखा था, कभी किसी ने हरी साड़ी पहनी महिला को। कभी उन्होंने अजीब चीखें सुनी थीं, कभी हँसी की आवाज़ें। लोग आमतौर पर दिन के समय ही उस जगह पर जाते थे।
कुछ साल पहले की बात है। गाँव में रणजीत नाम का एक युवक रहता था। रणजीत की शादी दो महीने पहले हुई थी। उर्स के दिन घर रिश्तेदारों से भरा हुआ था, खाना परोसा गया और सब अपने-अपने घर चले गए। अगले दिन उन्होंने देवी के दर्शन के लिए जाने का फैसला किया, लेकिन उस दिन रणजीत को काम से आने में बहुत देर हो गई, इसलिए दर्शन के लिए जाना बहुत देर हो गई। शाम के आठ बज चुके थे। फिर भी, रणजीत और उसकी पत्नी रंजना तैयार होकर घर से निकल पड़े क्योंकि उन्हें दर्शन के लिए जाना था।
दोनों अपनी-अपनी मोटरसाइकिलों पर सवार होकर चल पड़े। रास्ते में लौटते हुए लोगों की भीड़ दिखाई दी, लेकिन धीरे-धीरे भीड़ छंटती चली गई। रणजीत और उसकी पत्नी संकरी सड़क के अंत तक पहुँच गए। रणजीत ने मोटरसाइकिल बंद की और उसे एक तरफ खड़ा कर दिया। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। रणजीत ने चारों ओर देखा, वहाँ एक भी व्यक्ति नहीं था। कुछ दूरी पर स्थित एक सुनसान घर पर उसकी नज़र पड़ी और एक पल के लिए उसे बेचैनी महसूस हुई।
"यहां आकर हमने कोई गलती नहीं की," रणजीत ने कहा।
"अरे, तुम देवी के दर्शन करने आए हो, तुम्हारा मतलब क्या है?" रंजना ने कहा।

"कोई बात नहीं," रंजीत चुप हो गया और आगे कुछ नहीं बोला क्योंकि रंजना को इस जगह के बारे में कुछ भी पता नहीं था।
"ठीक है, चलिए आगे बढ़ते हैं," रणजीत ने कहा।
दोनों खेत में बने रास्ते पर आगे बढ़े। चारों ओर अंधेरा छाया हुआ था। दूर से देवी का छोटा सा मंदिर दिखाई दे रहा था, मंदिर के सामने एक मंद सफेद दीपक जल रहा था।
चलते-चलते उनके पैर कांप रहे थे। किसी तरह वे दोनों मंदिर तक पहुंचे। दोनों ने देवी के दर्शन किए और वापस मुड़ गए। तेज़ी से चलते हुए वे सड़क पर पहुंच गए।
रात में कीड़े-मकोड़े चहचहा रहे थे। बीच-बीच में कुत्ते के भौंकने की आवाज़ सुनाई दे रही थी। रणजीत ने मोटरसाइकिल को लात मारी, लेकिन वह स्टार्ट नहीं हुई। उसने बार-बार कोशिश की, पर स्टार्ट नहीं हुई। रणजीत और उसकी पत्नी अब बेचैन होने लगे थे। इस अंधेरी, सुनसान जगह पर सिर्फ़ वे दोनों ही बचे थे, सड़क पर कोई भी नहीं था। लात मारते-मारते रणजीत थक चुका था।
"अब हमें क्या करना चाहिए?" रंजना ने कहा।
"अब मुझे बस इसे दो किलोमीटर तक धकेलना था," रणजीत ने कहा।
रणजीत ने मोटरसाइकिल को धक्का देना शुरू किया। रंजना उसके पीछे-पीछे चल रही थी, दोनों पूरी रफ्तार से आगे बढ़ रहे थे। लगभग आधा किलोमीटर की दूरी तय करने के बाद, रणजीत को कुछ महसूस हुआ; उसे पीछे से रंजना के चलने या बात करने की कोई आवाज नहीं सुनाई दी। उसने तुरंत पीछे मुड़कर देखा, और जब उसने देखा तो रंजना कहीं नजर नहीं आ रही थी। रणजीत का दिल बैठ गया। उसने रंजना को जोर से आवाज दी, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया।
रणजीत ने मोटरसाइकिल एक तरफ खड़ी की और पीछे मुड़ गया। दूर खुले मैदान में कोई दिखाई नहीं दिया। रणजीत डर गया। वह रंजना को ढूंढने के लिए इधर-उधर भागने लगा, लेकिन रंजना कहीं नजर नहीं आई।
इधर-उधर खोजते-खोजते अचानक रणजीत के कानों में एक आवाज़ पड़ी। यह रंजना की आवाज़ थी। रंजना मदद के लिए चिल्ला रही थी। आवाज़ खेत के किनारे से आ रही थी। रणजीत दौड़कर उस ओर गया। जब तक वह वहाँ पहुँचा, रंजना की आवाज़ बंद हो चुकी थी और फिर से सन्नाटा छा गया था।

कुछ पल बीतने के बाद रंजना की आवाज़ फिर सुनाई दी, इस बार उसकी आवाज़ में बहुत डर था। उसकी आवाज़ सुनकर रंजीत का दिल डर से भर गया। वह आवाज़ की तरफ चारों ओर भागा। थोड़ा आगे जाकर रंजीत रुक गया क्योंकि उसके सामने एक पुराना, जर्जर मकान था।
रंजना की आवाज फिर सुनाई दी, "मुझे बचाओ, रणजीत, मुझे बचाओ..."।
सुनसान घर से रंजना की आवाज आ रही थी। रणजीत बिना सोचे-समझे घर की ओर दौड़ पड़ा।
रणजीत घर के सामने खड़ा था। चारों ओर सन्नाटा पसरा हुआ था। उसने सामने के जर्जर दरवाजे को धक्का दिया और वह धड़ाम से खुल गया। अंदर अँधेरा था।
धड़कते सीने के साथ रणजीत अंदर दाखिल हुआ। सामने की खिड़की से हल्की रोशनी अंदर आ रही थी।
अंदर, दाहिनी ओर एक दरवाजा था, और उस दरवाजे के पीछे से, कोई धीरे से अंदर झुका और रंजीत को देखने लगा।
दरवाजे पर कोई झुकी हुई खड़ी थी। वह एक महिला थी। उसके लंबे बाल लटक रहे थे, एक सफेद आंख दूसरी लाल आंख पर टिकी हुई थी, और उसके आधे खुले काले होंठों के बीच दांतों की कतार में एक कांटा दिखाई दे रहा था।
रणजीत को लगा कि कोई उसे देख रहा है, उसने दरवाजे की तरफ देखा। वहां कोई नहीं था।
कमरे के अंदर से कराहने की आवाज आई।
"रणजीत... मुझे बचाओ"
"हा... हा... ये रंजना की आवाज़ है, रंजना!" रणजीत ने दरवाज़े से अंदर आते ही चिल्लाया। धुंधली रोशनी में उसे सिर्फ़ एक पुराना पलंग दिखाई दिया। वहाँ कोई नहीं था। उसने रंजना को ज़ोर से पुकारा, पर रंजना कहीं नहीं मिली। रणजीत को पसीना आ रहा था। डर से उसका पेट मचल रहा था। अनजाने में ही उसकी आँखों से आँसू बहने लगे।
रणजीत पीछे मुड़ा, बीच वाले दरवाजे से होते हुए बाहरी कमरे में चला गया, और अचानक वह उसके सामने प्रकट हो गई।
वह ठीक उसके सामने खड़ी थी। सफेद आँखें, लंबी नाक, काले होंठों से बाहर निकलती लाल जीभ। उसने एक ज़ोरदार आवाज़ निकाली और उसके लंबे, सीधे दाँत बाहर आ गए।

रणजीत उसे बड़ी-बड़ी आँखों से घूर रहा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे। उसका पूरा शरीर जम गया था। उसे अपनी मौत आँखों के सामने दिख रही थी।
रणजीत ने संघर्ष किया और वहीं गिर पड़ा।
कर्कश आवाज में हंसते हुए वह आगे बढ़ी, उसकी लंबी भुजाएँ फैली हुई थीं, उसके लंबे काले नाखून रंजीत की आँखों के सामने आ गए। रंजीत की जान खतरे में थी।
उसके सिर में एक अजीब सी अनुभूति छा गई और उसकी आंखों के सामने अंधेरा छाने लगा।
"रंजित रंजित उठा"
किसी ने गहरी आवाज़ में रणजीत को पुकारा। रणजीत ने आँखें खोलीं और सामने रंजना को देखा। रंजना को देखकर वह प्रसन्न हुआ और उसकी बाहों में गिर पड़ा। कुछ क्षणों तक दोनों बिना कुछ बोले वहीं बैठे रहे।
रणजीत और रंजना उस सुनसान घर से बाहर निकले। बाहर घना अंधेरा था।
दोनों खेत में तेज़ी से चल रहे थे। बीच में सरसराहट की आवाज़ सुनाई दी।
रंजना ने रंजीत का हाथ कसकर पकड़ रखा था।
दोनों चलते-चलते सड़क पर पहुँच गए। रणजीत की मोटरसाइकिल आगे थी। रणजीत ने अपनी जेब से चाबी निकाली और मोटरसाइकिल पर बैठ गया, उसने किक मारी और मोटरसाइकिल स्टार्ट हो गई।
"चलो रंजना, जल्दी करो, हमें यहाँ से जल्दी निकलना होगा," रणजीत ने कहा, लेकिन रंजना रणजीत को घूरती रही।
"अरे, क्या हुआ? तुम ऐसे क्यों खड़े हो? जल्दी बैठ जाओ।"
"रणजीत, तुम्हें घर जाना चाहिए, मैं यहां से नहा नहीं पाऊंगी," रंजना ने ठंडी आवाज में कहा।
"पागल कहीं के, तुम क्या बकवास कर रहे हो?" रणजीत मोटरसाइकिल से नीचे उतरा और रंजना की ओर मुड़ा।
रंजना की आँखों में उसे एक अलग ही रूखापन दिखाई दिया। रंजीत के पेट में अजीब सी बेचैनी होने लगी।
रंजना ने हाथ उठाकर पास के खेत में स्थित एक विशाल बरगद के पेड़ की ओर इशारा किया। रंजीत ने उस दिशा में देखा और उसे उस पेड़ की एक शाखा पर रंजना का शव खून से लथपथ लटका हुआ दिखाई दिया।

यह देखकर रणजीत चौंक गया। एक पल के लिए वह होश खो बैठा, ये क्या हो रहा है? रंजना उस पेड़ पर बैठी है, तो मेरे साथ कौन है? उसने पलक झपकते ही सामने देखा, लेकिन वहाँ कोई नहीं था।
दो घंटे पहले…
रणजीत अपनी मोटरसाइकिल को धकेलते हुए आगे चल रहा था और रंजना उसके पीछे- पीछे चल रही थी। लेकिन उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि कोई उसके पीछे आ रहा है।
चलते-चलते रंजना को अचानक महसूस हुआ कि कोई उसके पीछे, उसके बहुत करीब आ गया है, कोई उससे लिपटकर उसके साथ चल रहा है। डर की एक लहर रंजना के शरीर में दौड़ गई। उसने झट से पीछे मुड़कर देखा, राक्षस उसके सामने खड़ा था। उसका भयानक रूप देखकर रंजना दंग रह गई। उसने चीखने के लिए मुंह खोला, लेकिन पल भर में राक्षस उस पर झपटा और उसे नीचे गिरा दिया। रंजना बेहोश हो गई। उसके बगल वाले खेत में घुटने तक ऊँचा एक पौधा उग आया था। उसने उसे वहाँ से घसीटकर दूर ले गई। अर्धचेतना की अवस्था में रंजना ने देखा कि साँप उसके ऊपर बैठा है। साँप ने अपने लंबे, नुकीले नाखून रंजना की गर्दन में गड़ा दिए।
रंजना के गले से एक पतली, कर्कश ध्वनि निकली और वह वहीं गिरकर मर गई। रंजना के शव को पास ही स्थित एक विशाल बरगद के पेड़ से रस्सी से बांध दिया गया था।
रंजना का शरीर तो नष्ट हो चुका था, लेकिन उसके शरीर में मौजूद रोगाणु उसके पति के शरीर में रह गए थे। वह जानती थी कि रंजीत को उसे ढूंढने में काफी मशक्कत करनी पड़ेगी।
रंजना उस सुनसान घर में आई थी, उसे पता था कि रंजीत को उस चोर ने धोखा देकर घर में कैद कर रखा था।
उस सुनसान घर में रणजीत अधमरा पड़ा था। उसके सामने वह दुष्ट स्त्री उसे जान से मारने के लिए तैयार खड़ी थी। जैसे ही वह आगे बढ़कर रणजीत पर वार करने वाली थी, घर का दरवाजा खुला और रंजना अंदर आ गई।
उसकी आँखों में आग सी जल रही थी। सामने असहाय और बेहोश पड़े रंजीत को देखकर वह पीछे हट गई।
वह एक सच्ची दैवीय शक्ति थीं जिन्होंने अपने पति की मृत्यु के बाद भी उनका बचाव किया।

शरीर उस बल का सामना करने के लिए पर्याप्त मजबूत नहीं था। एक ज़ोरदार चीख के साथ, शरीर वहाँ से गायब हो गया।

ज़ोटिंग

विक्रम का जन्म और पालन-पोषण मुंबई जैसे बड़े शहर में हुआ। शहरी परिवेश में पले-बढ़े विक्रम को गाँव के बारे में ज़्यादा जानकारी नहीं थी, लेकिन वह अपने दोस्तों के साथ कोंकण, नगर, पुणे आदि जगहों पर चार-पाँच बार पिकनिक मनाने गया था। लेकिन पिकनिक हमेशा तय कार्यक्रम के अनुसार ही होती थीं। गाँव और शहर में बस घर और पिकनिक स्थल का ही फ़र्क था।
डिग्री कॉलेज का पहला साल अभी शुरू ही हुआ था, मानसून शुरू हुए एक हफ्ता बीत चुका था। विक्रम और चार अन्य लड़के एक साथ कॉलेज आया करते थे।
जुलाई के पहले सप्ताह में पिकनिक पर जाने की योजना बनाई गई। मुंबई के पास स्थित, बेहद खूबसूरत जगह अलीबाग को चुना गया। बीच पर रुकने का फैसला किया गया, जो अलीबाग से आधे घंटे की दूरी पर है। यह जगह हम सबके लिए बिल्कुल नई थी।
जून महीना जल्दी बीत गया। योजना के अनुसार, जुलाई के पहले सप्ताह में विक्रम और उसके दोस्त अलीबाग के लिए रवाना हो गए।
निर्धारित समय पर आने वाली गाड़ी सुबह आठ बजे पहुंची, ड्राइवर जगदीश का मामा था, जो विक्रम का दोस्त था।
ट्रेन मुंबई से रवाना हुई, सुबह की किरणें फैल रही थीं, हवा में ठंडी-ठंडी हवा बह रही थी और रुक-रुक कर हल्की बारिश हो रही थी। सूरज और परछाई का खेल चल रहा था, कभी सूरज की गर्मी तेज होती थी तो अचानक परछाई छा जाती थी। गाड़ी आधी दूरी तय कर चुकी थी, ड्राइवर अंकल आराम से धीमी गति से गाड़ी चला रहे थे। शनिवार होने के कारण शहर से बाहर घूमने निकले बहुत से लोग थे और सड़क पर छोटे-बड़े वाहनों का जाम लगा हुआ था। सुबह 10:30 बजे गाड़ी अलीबाग गेट में दाखिल हुई, वहां से लगभग आधे घंटे में सभी लोग समुद्र तट पर पहुंच गए।
वहाँ एक ग्रामीण का घर था, उसके पीछे थोड़ी दूरी पर उसने पर्यटकों के लिए एक छोटा सा घर बनाया था, जिसमें तीन-चार कमरे थे, सभी लोग वहाँ उतर गए। कुछ देर बाद, सभी ने अपना सामान कमरे में रखा और टहलने के लिए बाहर आ गए।
सभी लोग उत्साहित थे। समुद्र तट घर से मात्र 150 कदम दूर था। सभी लोग पैदल ही समुद्र तट की ओर चल पड़े।

उनके सामने नीला, अथाह सागर फैला हुआ था। बारिश अभी शुरू ही हुई थी। उनकी तरह कुछ और लोग भी वहाँ घूमने आए थे। लेकिन वहाँ ज्यादा भीड़ नहीं थी। विक्रम और उसके दोस्त पानी में उतर गए। सभी उबड़-खाबड़ समुद्र में खुशी- खुशी तैर रहे थे। हालांकि, ड्राइवर अंकल किनारे पर एक जगह बैठे थे। उन्होंने पहले ही सभी बच्चों को चेतावनी दे दी थी कि समुद्र बहुत उबड़- खाबड़ है, ज्यादा दूर मत जाओ और किनारे के पास ही खेलो। सभी को तैरना आता था, लेकिन आइवी जैसी शख्सियत को समुद्र पर क्या भरोसा हो सकता था, फिर भी सभी बच्चे सावधानी से समुद्र के पानी का आनंद ले रहे थे।
दोपहर के बारह बज रहे थे। विक्रम और उसके दोस्त समुद्र में खेल रहे थे। वे एक-दूसरे पर पानी फेंक रहे थे, धक्का-मुक्की कर रहे थे, और अचानक एक पल विक्रम वहीं लड़खड़ा गया। उसे लगा जैसे किसी ने उसका पैर कसकर पकड़ रखा हो। डर के मारे विक्रम जोर से चिल्लाया, उसने हिलने की कोशिश की और अपना संतुलन खो बैठा।
सभी बच्चे उसकी ओर दौड़े। विक्रम पानी में टिड्डे खा रहा था। तब तक उसके चाचा ने यह देख लिया था और वे भी तुरंत वहाँ दौड़े। सभी बच्चे विक्रम को वहाँ से बाहर ले आए। उन्होंने उसे किनारे पर एक बड़े पेड़ के पास बिठा दिया।
विक्रम हांफ रहा था। कुछ देर तक सांस लेने के लिए हांफने के बाद जगदीश ने पूछा, "अरे, अचानक क्या हुआ, विक्रम?"
विक्रम ने हांफते हुए कहा, "पानी में किसी ने मेरा पैर कसकर पकड़ रखा था, मैं हिल भी नहीं पा रहा था।"
"ओह, लगता है तुम्हारे पैर कीचड़ में फंस गए हैं," समूह में से एक अब्दुल ने कहा।
"नहीं, अब्दुल, मुझे सच में लगा कि किसी ने मेरा पैर पकड़ रखा है, मैंने हिलने की कोशिश की और अपना संतुलन खो बैठा और पानी में गिर गया," विक्रम डरी हुई आवाज में कह रहा था।
"अरे, इसे देखो," जगदीश ने विक्रम के पैरों को बड़ी-बड़ी आँखों से देखते हुए कहा।
विक्रम के पैरों पर सैकड़ों लाल निशान थे। उन्हें देखकर सब लोग कुछ देर के लिए डर गए।

"डरने की कोई बात नहीं, बच्चों, किनारे के पास एक मछली आ गई है," ड्राइवर चाचा ने कहा।
दोपहर के एक बज चुके थे। सब लोग बहुत थके हुए थे। सबसे पहले, सब लोग विक्रम को कमरे में ले गए। वहाँ उन्होंने विक्रम के पैर पर एंटीसेप्टिक मरहम लगाया। विक्रम को ज़्यादा दर्द नहीं था और लालिमा धीरे-धीरे कम हो रही थी। इससे सबको तसल्ली मिली।
सभी लोग दोपहर का भोजन करने बाहर गए। पास के एक रेस्तरां में सभी ने भरपेट भोजन किया और फिर अपने-अपने कमरे में लौट आए। दोपहर हो चुकी थी, सभी थोड़े थके हुए थे, एक-एक करके सभी लेट गए और गहरी दोपहर की नींद में सो गए।
शाम का समय था, सूरज की नारंगी किरणें आसमान में फैल रही थीं। बच्चों का पूरा समूह और ड्राइवर अंकल शाम की सैर के लिए निकले। समुद्र तट पर बड़े- बड़े नारियल के पेड़ थे, साथ ही कई अन्य प्रकार के पेड़ भी थे। घने जंगल में चलने के लिए छोटे-छोटे रास्ते बने हुए थे।
विक्रम और उसके दोस्त घने पेड़ों के बीच इत्मीनान से टहल रहे थे। वहाँ बहुत कम लोग थे। विक्रम सुबह की घटनाओं को लगभग भूल चुका था। सभी लोग काफी देर तक इधर-उधर घूमते रहे और तस्वीरें लेते रहे। सूरज डूब चुका था और धीरे- धीरे अंधेरा छाने लगा था। सबने वापस लौटने का फैसला किया।
एक रास्ते पर चलते हुए विक्रम को अचानक एक आवाज सुनाई दी।
'विक्रम…'
विक्रम ने हैरानी से पीछे मुड़कर देखा, दूर-दूर तक कोई दिखाई नहीं दे रहा था। एक पल के लिए विक्रम स्तब्ध खड़ा रहा, कुछ समझ नहीं पा रहा था। तभी हवा का एक तेज़ झोंका आया और सब कुछ उड़ा ले गया। विक्रम ने मुड़कर देखा तो पाया कि वह उस विशाल क्षेत्र में अकेला खड़ा था, उसका एक भी दोस्त वहाँ नज़र नहीं आ रहा था। चारों ओर घना अंधेरा था। बारिश शुरू हो चुकी थी। विशाल सागर की अंतहीन लहरों की आवाज़ उसके कानों में गूँज रही थी। विक्रम पूरी तरह से भ्रमित था। उसके पैर काँपने लगे थे और वही आवाज़ फिर से उसके कानों तक पहुँची।
'विक्रम…'
विक्रम का सीना कस गया। उसने पीछे मुड़कर देखा और सामने का दृश्य देखकर उसकी धड़कन रुक गई।

उसके सामने एक आदमी खड़ा था। उसकी आँखों के गड्ढे खाली थे और उनसे खून टपक रहा था। उसके चेहरे पर एक घिनौनी मुस्कान फैली हुई थी। उसने अपनी खून से सनी जीभ अपने होठों पर फिराई।
अब बारिश तेज होने लगी थी। विक्रम के दोस्त और ड्राइवर चाचा विक्रम को ढूंढ रहे थे।
"अरे, यह रिकॉर्ड अचानक कैसे गायब हो गया?" चाचा ने कहा।
"विक्रम मेरे पीछे चल रहा था, मैंने उसे काफी देर तक देखा ही नहीं, इसलिए जब मैंने पीछे मुड़कर देखा तो विक्रम कहीं नहीं था," जगदीश ने डरी हुई आवाज में कहा।
"अब मैं उसे कहाँ ढूंढूँ? बहुत तेज बारिश होने लगी है," चाचा ने कहा। जगदीश ने कहा, "चाचा जी, मैं, अब्दुल और ऊपर जाकर देखेंगे।"
"ठीक है, तब तक मैं जयेश और तुषार के आसपास के इलाके में खोजबीन कर लूंगी," मामा ने कहा।
जगदीश और अब्दुल कमरे में पहुंचे और उसकी तलाशी ली, घर के मालिक से पूछताछ की, लेकिन विक्रम के बारे में किसी को कुछ भी पता नहीं था।
यहां चाचा बच्चों के साथ विक्रम की तलाश कर रहे थे। उन्होंने समुद्र के आसपास का इलाका, बाजार और कुछ अन्य स्थान भी देखे, लेकिन विक्रम कहीं नहीं मिला।
विक्रम के लापता हुए तीन घंटे बीत चुके थे। रात के दस बज चुके थे। सभी लोग भूख-प्यास की परवाह किए बिना विक्रम को ढूंढ रहे थे, लेकिन हर तरफ निराशा ही निराशा थी।
तेज़ बारिश हो रही थी। रात के ग्यारह बज रहे थे। जगदीश और अब्दुल एक बड़े पेड़ के नीचे खड़े थे। दूर से एक व्यक्ति उनकी ओर आ रहा था। वह व्यक्ति धीरे-धीरे उनकी ओर बढ़ रहा था और तेज़ बारिश में भीगता जा रहा था। जगदीश और अब्दुल उस दिशा में देख रहे थे। घोर अंधेरे में तेज़ बारिश के कारण आगे का नज़ारा धुंधला दिख रहा था।
वह व्यक्ति अब महज बीस कदम दूर आकर रुक गया था; वह विक्रम था। जगदीश और अब्दुल आगे दौड़ पड़े।
जगदीश और अब्दुल ने उससे सवालों की बौछार शुरू कर दी, लेकिन विक्रम के पास कोई जवाब नहीं था।
"अरे, तुम्हें क्या हुआ है, तुम बात क्यों नहीं कर रहे हो?" अब्दुल ने कहा।

"अरे, कुछ बोलो, इतने दिनों से कहाँ थे?" जगदीश ने पूछा।
अब्दुल ने कहा, "जगदीश, चलो पहले उसे होटल के कमरे में ले चलते हैं, बहुत तेज बारिश हो रही है, और तुषार को फोन करके बता दो कि विक्रम मिल गया है।" जगदीश ने तुषार को फोन किया और कहा, "ठीक है।"
सभी लोग होटल के कमरे में बैठे थे।
"ओह, मैंने पुलिस स्टेशन जाकर उसके गुम होने की रिपोर्ट दर्ज कराने का फैसला किया था," चाचा ने कहा।
"मैंने भी यही सोचा था, लेकिन फिर हमें यह मिला," अब्दुल ने कहा।
"तुमने क्या कहा, तुम कहाँ थे, क्या हुआ?" चाचा ने पूछा।
"ओह अंकल, वो कुछ नहीं बोल रहे हैं, बस खाली जगह को घूर रहे थे, मुझे नहीं पता क्या हुआ," जगदीश ने कहा, और तभी विक्रम बाथरूम से बाहर आ गया।
"अरे, तुम सब ऐसे क्यों बैठे हो? खाना कब खाओगे? बहुत देर हो गई है," विक्रम ने सरलता से कहा, और सब एक-दूसरे के चेहरों को देखने लगे।
"ओह, शाम से हमारे जीवन में कोई हलचल नहीं थी, तुम अचानक किनारे से गायब हो गए, उसके बाद हम तुम्हें कहीं नहीं ढूंढ पाए, अगर तुम कहीं थे भी तो कहाँ हो?" चाचा ने कहा।
"मैं... हा हा हा... अच्छा, मैं तुम्हें सब कुछ बता दूंगा, लेकिन पहले खाना खा लेते हैं, मुझे बहुत भूख लगी है, चलो खाना खाते हैं," विक्रम ने कहा।
कुछ ही समय में, सबने खाना खा लिया, विक्रम सामान्य रूप से व्यवहार करने और बात करने लगा, मानो कुछ हुआ ही न हो।
आधी रात हो चुकी थी। सभी लोग होटल के बाहर आंगन में बैठे थे।
विक्रम कह रहा था, "शायद आपको यकीन न हो कि मैं अब आपको क्या बताने वाला हूं।"
"हमें बताओ कि ऐसा क्या हुआ जो इतना अविश्वसनीय था," माँ ने कहा।
"जब हम शाम को टहलने निकले, तो मुझे उन पेड़ों के पास एक अजीब सी आवाज़ सुनाई दी। वह आवाज़ अभी भी मेरे कानों में गूंज रही है। मैं उस आवाज़ से सम्मोहित हो गया था। मैं उस आवाज़ की ओर बढ़ा, और एक जगह, एक बहुत बड़े पेड़ के नीचे, जो मैंने देखा उसे देखकर मेरी आँखें चमक उठीं," विक्रम धीर गंभीर स्वर में बोल रहे थे।
"तुमने क्या देखा?" जगदीश ने आश्चर्य से पूछा।

विक्रम बता रहा था, “उस पेड़ के नीचे एक बड़ा सा गड्ढा था, उस गड्ढे में एक बक्सा था, और वह बक्सा सोने के सिक्कों, हीरों और मोतियों से भरा हुआ था। उसे देखकर मैं दंग रह गया, मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा, अब उसे याद करके ही मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं।”
सभी ने कुछ पल के लिए विक्रम के चेहरे को घूरकर देखा और जोर-जोर से हंसने लगे, लेकिन चाचा के चेहरे पर अब भी हैरानी का भाव था।
इस विषय पर सब लोग हंस पड़े। लेकिन जगदीश को कुछ परेशान कर रहा था। वह विक्रम को कुछ संदेह भरी नजरों से देख रहा था।
कुछ देर तक सब लोग इधर-उधर बैठकर बातें करते रहे।
रात को, जब सब लोग सो गए, तो चाचा ने विक्रम को एक तरफ बुलाया।
"विक्रम, क्या तुम सचमुच मुझे उस बक्से के बारे में बता रहे हो?", चाचा ने विक्रम से पूछा।
"मैं सच कह रहा हूँ, चाचाजी, लेकिन इन सभी सोने के सिक्कों को ले जाने के लिए मुझे किसी की मदद की ज़रूरत होगी, और अगर कोई तैयार नहीं है, तो मैं इसे अकेले ही संभाल लूँगा," विक्रम की आँखों में एक अलग ही चमक थी।
"ठीक है, चलो मुझे वहाँ ले चलो," माँ ने कहा।
सुबह के एक बज चुके थे। बाहर घना अंधेरा था। किसी को बिना बताए, मामा और विक्रम दोनों होटल से निकल गए। मामा अपने साथ एक टॉर्च ले गए थे।
दोनों समुद्र के किनारे उस विशाल क्षेत्र की ओर चल पड़े। आसपास का वातावरण शांत था। लगातार बारिश हो रही थी। विक्रम आगे चल रहा था और उसका चाचा उसके पीछे चल रहा था। दोनों लगभग दस मिनट तक चले। थोड़ी देर में, दोनों एक बड़े पेड़ के नीचे आ पहुँचे, जहाँ विक्रम रुक गया।
"देखिए, चाचा जी, आगे आइए," विक्रम ने छेद में देखते हुए कहा।
चाचा धीरे-धीरे आगे बढ़े और सामने देखा, उनके सामने एक बड़ा गड्ढा था। मामा ने टॉर्च की रोशनी छेद में डाली और सामने का दृश्य देखकर उनकी छाती ज़ोर से धड़कने लगी। उनके पैर कांपने लगे, उन्होंने विक्रम की ओर एक नज़र डाली, विक्रम के चेहरे पर एक खूनी मुस्कान फैल गई, उनका चेहरा धीरे-धीरे बदलने लगा, उनकी दोनों आंखें गायब हो गईं और उनकी जगह काली लकीरें दिखाई देने लगीं, उनके दांत बड़े हो गए। पलक झपकते ही वह आगे बढ़े और मामा को पकड़ लिया।

उसने अपने चाचा का शव गड्ढे में फेंक दिया। उसके चाचा के बगल में एक और शव पड़ा था, विक्रम का...
रात के 1:30 बज चुके थे। सभी बच्चे गहरी नींद में सो रहे थे।
जयेश और तुषार जिस कमरे में सो रहे थे, उसके दरवाजे पर ज़ोर से दस्तक हुई।
जयेश और तुषार दोनों चौंककर जाग गए। जयेश उठकर तेज़ी से दरवाजा खोलने गया।
उसके सामने चाचा खड़े थे। चाचा का चेहरा पसीने से तरबतर था।
"जयेश और तुषार, दोनों जल्दी आओ, विक्रम फिर गायब हो गया है और मैंने उसे समुद्र की ओर जाते देखा," चाचा जोर-जोर से बोल रहे थे।
उनकी अनुपस्थिति देखकर जयेश और तुषार दोनों अपने चाचा के साथ बाहर आए।
तीनों दौड़कर उस जगह पहुंचे। सामने पेड़ के नीचे एक बड़ा गड्ढा था।
जयेश और तुषार आगे आए, झुके और गड्ढे में देखा। गड्ढे में विक्रम और उसके चाचा के शव देखकर दोनों स्तब्ध रह गए।
"हम्म... ये चाचाजी यहाँ लेटे हुए हैं, तो हमारे साथ कौन है...", जयेश और तुषार ने पीछे मुड़कर देखा और पलक झपकते ही वह उन दोनों पर झपटा और उनकी नारदी का एक घूंट पी गया।
वह एक-एक करके सबको मार रहा था, अब सिर्फ जगदीश और अब्दुल ही बचे थे।
सुबह के दो बज चुके थे। जगदीश और अब्दुल अपने कमरे में सो रहे थे। दरवाजे पर ज़ोर से दस्तक हुई। जगदीश और अब्दुल नींद से जाग गए।
जगदीश ने दरवाजा खोला। तुषार बाहर खड़ा था।
"ओह जगदीश अब्दुल, यार, बहुत बड़ी समस्या है," तुषार ने रोते हुए कहा।
"आखिर हुआ क्या?" जगदीश ने पूछा।
तुषार ने कहा, "कृपया मेरे साथ आइए, विक्रम, मामा और जयेश सब वहीं गायब हो गए हैं।"
"क्या कह रहे हो, यहाँ तो सब सो रहे हैं?" जगदीश कमरे से बाहर आते हुए बोला। उसने बगल के कमरे भी देखे। सारे कमरे खुले थे। अंदर कोई नहीं था। यह देखकर जगदीश और अब्दुल चौंक गए।
तुषार ने कहा, "मैंने उन तीनों को समुद्र की ओर जाते देखा, कृपया मेरे साथ आइए, हमें उन्हें जल्दी ढूंढना होगा।"
"एक मिनट रुको," जगदीश ने कहा और अंदर चला गया। वह अपने साथ एक टॉर्च और एक मोबाइल फोन ले गया।
अब्दुल, जगदीश और तुषार तीनों बाहर आ गए। जगदीश के मन में संदेह रह गया।

वे तीनों समुद्र के पास घने इलाके में पहुँच चुके थे। तुषार तेज़ी से आगे चल रहा था।
जैसे ही जगदीश और अब्दुल उस इलाके में कदम रखने वाले थे, जगदीश के मोबाइल की घंटी बजी, उन्हें किसी का फोन आया था।
"तुषार, रुको," जगदीश अचानक रुकते हुए बोला। तुषार भी वहीं रुक गया।
"क्या हुआ? चलो आगे बढ़ते हैं, हमें उन्हें जल्दी ढूंढना होगा," तुषार ने कहा।
"तुषार, तुम्हारे पिताजी का फोन आया था, कृपया यह फोन उठा लो," जगदीश ने मोबाइल आगे बढ़ाते हुए कहा।
"अरे, तुमने उन्हें क्यों बताया?" तुषार ने अपना मोबाइल फोन निकालते हुए कहा।
तुषार कुछ देर तक वहीं खड़ा अपने मोबाइल पर बात करता रहा, फिर उसने फोन रख दिया और जगदीश को वापस दे दिया।
"ठीक है, चलो जल्दी चलते हैं," तुषार ने कहा।
"तुम्हारे पिता ने क्या कहा?" जगदीश ने पूछा।
"अरे, कुछ नहीं, वे डरे हुए हैं, तुमने उन्हें यह सब क्यों बताया?" तुषार ने पीछे मुड़ते हुए कहा।
तुषार…
जगदीश ने कर्कश आवाज में कहा, "तुम्हारे पिता का निधन तब हुआ जब तुम छोटे थे, तुमने मोबाइल पर जिससे बात की थी वह मेरे पिता थे।"
यह सुनकर अब्दुल को अपने सामने खड़े व्यक्ति में बदलाव महसूस हुआ। वह धीरे से पीछे मुड़ा। तुषार का व्यवहार बदल गया था। गुस्से से उसकी मुट्ठियाँ भींची हुई थीं। यह देखकर अब्दुल बहुत डर गया और चार कदम पीछे हट गया।
"अगर हिम्मत है तो आओ और मेरी जगह में प्रवेश करो," उसने कहा।
जगदीश ने कहा, "मेरे दोस्त कहाँ हैं?"
उन्होंने हंसते हुए कहा, "हंसी के दौरे में।"
यह सुनकर दोनों बहुत डर गए। अब्दुल गुस्से से आग बबूला हो गया। जगदीश वहाँ खड़ा था, जैसे-तैसे हिम्मत जुटा रहा था।
"तुम... तुम कौन हो?" जगदीश ने पूछा।
और उसने ठंडी आवाज में कहा, "ज़ोटिंग"।

□□□□□□, □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□, □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□, □□□□□ □□□□□ □□□□□-□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□, □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□
□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□, "□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□"

मौत की रेख्ाा

नीरज एक हंसमुख और चंचल आठ वर्षीय लड़का था। वह अपने माता-पिता का इकलौता और लाडला बेटा था। उसके पिता का नाम प्रभाकर और माता का नाम विद्या था। जन्म से ही उसके माता-पिता ने उसे एक फूल की तरह प्यार किया और उसकी हर इच्छा पूरी की। प्रभाकर एक बड़े बैंक में शाखा प्रबंधक के पद पर कार्यरत थे। नीरज के जन्म से पहले, उसकी माँ विद्या एक अस्पताल में नर्स के रूप में काम करती थीं। नीरज के जन्म के बाद उन्होंने नौकरी छोड़ दी थी।
सब कुछ ठीक चल रहा था। एक दिन नीरज अपने माता-पिता के साथ घूमने निकला। रविवार का दिन था। तीनों अपनी गाड़ी से पास के एक पहाड़ी इलाके में घूमने गए थे। प्रभाकर ने दो दिन की छुट्टी ली हुई थी।
दो दिनों तक तीनों खूब घूमे-फिरे, नई जगहें देखीं, बगीचे देखे, ऊँची पहाड़ियाँ देखीं, पर्वतीय घाटियाँ देखीं, सब कुछ देखा। नीरज यह सब पहली बार देख रहा था। वह बहुत खुश था।
तीसरे दिन वे शहर लौटने वाले थे। तीनों कार से मुंबई के लिए रवाना हुए। कार धीरे-धीरे मुंबई पहुंची और अचानक नीरज को सांस लेने में तकलीफ होने लगी। प्रभाकर और विद्या उसे इस हालत में देखकर डर गए। प्रभाकर ने तुरंत कार को पास के अस्पताल की ओर मोड़ दिया।
तब तक नीरज की हालत बहुत खराब हो चुकी थी।
उस दिन, दोनों को अस्पताल जाना पड़ा। नीरज के कुछ टेस्ट हुए। उसे एक दिन अस्पताल में रहना पड़ा। अगले दिन, नीरज की रिपोर्ट आई। डॉक्टर ने प्रभाकर को केबिन में बुलाया और उनकी बात सुनकर प्रभाकर के पैरों तले ज़मीन खिसक गई। नीरज को एक लाइलाज बीमारी हो गई थी, जो धीरे-धीरे उसकी जानकारी के बिना बिगड़ती चली गई थी।
प्रभाकर और विद्या की आंखों में आंसू थे। नीरज को उस अस्पताल से स्थानांतरित कर दिया गया। मुंबई के एक बड़े अस्पताल में नीरज की जांच की गई और उसका इलाज शुरू हुआ।
नीरज का इलाज एक महीने से चल रहा था। उसे बार-बार अस्पताल जाना पड़ रहा था।
बाहर से सामान्य दिखने वाला नीरज अंदर से पूरी तरह टूट चुका था। कभी उसे अचानक खांसी का दौरा पड़ता, कभी वह हांफते हुए बैठ जाता। प्रभाकर और विद्या तो पूरी तरह से टूट चुके थे।

और एक रात…
नीरज को अचानक सांस लेने में तकलीफ होने लगी और उसके नाक और मुंह से खून बहने लगा। प्रभाकर और विद्या बहुत डर गए। नीरज को अस्पताल ले जाया गया। नीरज अस्पताल में बिस्तर पर लेटा हुआ था, उसके चारों ओर डॉक्टर और नर्सें मौजूद थीं। डॉक्टरों के चेहरे पर चिंता साफ झलक रही थी। नीरज को कृत्रिम श्वसन दिया जा रहा था। नीरज अपने आखिरी पलों की गिनती कर रहा था। आधी रात हो चुकी थी।
प्रभाकर और विद्या चिंता से व्याकुल होकर एक तरफ बैठे थे। दोनों की आंखों से आंसू बह रहे थे। अपने इकलौते बच्चे को इस तरह मरणासन्न अवस्था में देखकर उनका दिल टूट रहा था।
बिस्तर के पास लगी मशीन पर नीरज की धड़कन धीरे-धीरे कम हो रही थी, और आखिरकार वह क्षण आ ही गया। नीरज की धड़कन पूरी तरह से रुक गई, मशीन पर बनी घुमावदार रेखा आखिरकार थम गई।
डॉक्टर ने घड़ी देखी और बगल में खड़ी नर्स की ओर देखते हुए कहा, "मृत्यु का समय, 12.15"।
डॉक्टर ने पीछे मुड़कर प्रभाकर की ओर देखा और कहा, "मुझे खेद है।" प्रभाकर का दिल एक पल के लिए धड़कना बंद हो गया, वह नीरज के बेजान शरीर को देखता रहा। विद्या की आँखों से आंसू बहने लगे, वह नीरज के पास आई और प्यार से उसके सिर पर हाथ फेरा।
घड़ी में रात के 12:30 बज रहे थे। नीरज के शरीर पर एक सफेद चादर बिछी हुई थी। प्रभाकर कुछ देर के लिए बाहर गया हुआ था। विद्या नीरज के बगल में बैठी थी। उसने अपना कांपता हुआ हाथ नीरज के हाथ पर रखा हुआ था। उसका दिमाग पूरी तरह सुन्न था।
और अचानक अस्पताल की बत्तियाँ बुझ गईं। पूरा अस्पताल अंधेरे में डूब गया। लेकिन विद्या वहीं बैठी रही। कमरे के एक कोने में स्थित खिड़की से हल्की रोशनी धीरे-धीरे फैलने लगी।
और अचानक उसके कानों में एक आवाज पड़ी, "माँ"।
विद्या ने चारों ओर देखा, उसे लगा कि उसने कुछ महसूस किया होगा, और अगले ही पल उसे अपनी बगल में हलचल महसूस हुई। नीरज की बांह हिल गई थी। विद्या ने पलक झपकते ही नीरज के शरीर से चादर हटाई और देखा कि नीरज ने अपनी आँखें खोल

दी थीं, वह हिलने-डुलने लगा था। मंद सफेद रोशनी में नीरज की आँखें चमक रही थीं।
यह देखकर विद्या को समझ नहीं आया कि क्या करे, वह दौड़कर बाहर गई और डॉक्टर को बुला लाई। तब तक प्रभाकर भी वहाँ पहुँच चुका था और अस्पताल की बत्तियाँ भी जल चुकी थीं।
प्रभाकर और विद्या खुशी से रो रहे थे। डॉक्टरों ने नीरज की जांच की। मशीन पर नीरज की धीमी धड़कन दिखाई दे रही थी। डॉक्टर और नर्स उसके चारों ओर जमा थे। यह सबके लिए एक चमत्कार था।
नीरज एक और दिन अस्पताल में रहा। उसकी हालत धीरे-धीरे सुधर रही थी।
डॉक्टरों ने उसकी जांच की और कुछ परीक्षण किए। नीरज ने हर तरह से डॉक्टरों को अचंभित कर दिया था। चिकित्सा जगत में यह एक बहुत ही दुर्लभ घटना थी। नीरज दो दिन के भीतर अपने घर लौट आया। कुछ दिनों तक दवा लेने के बाद नीरज ठीक हो गया।
दिन-ब-दिन नीरज की सेहत में सुधार होता गया और उस लाइलाज बीमारी का कोई निशान बाकी नहीं रहा। लेकिन नीरज में कुछ बदलाव आ गया था; वह पहले की तरह मुस्कुराता और खेलता नहीं था, वह थोड़ा उदास हो गया था, लेकिन प्रभाकर और विद्या को इसकी ज्यादा परवाह नहीं थी।
और एक रात…
उस रात प्रभाकर को ऑफिस से देर हो रही थी। घर पर सिर्फ विद्या और नीरज थे। खाना खाने के बाद विद्या और नीरज प्रभाकर का इंतज़ार कर रहे थे। रात ग्यारह बजे प्रभाकर ने फोन किया और बताया कि वह आज घर नहीं आ पाएगा। नीरज को नींद आ रही थी। विद्या ने फोन काट दिया और नीरज को अपने कमरे में ले गई। रात के बारह बज रहे थे। विद्या अभी सोई ही थी कि अचानक घर की बत्तियाँ बुझ गईं। खिड़की से हल्की रोशनी घर में फैल गई। नीरज बिस्तर पर उठ बैठा था।
विद्या तुरंत जाग गई और उसने देखा कि नीरज उठकर बैठ गया है।
उसने उससे पूछा, "नीरज, क्या हुआ, क्या गर्मी बढ़ रही है?"
"मेरी मां को फोन करो," नीरज ने कहा।
"नीरज, तुम क्या कर रहे हो, मैं तुम्हारी मां हूं," विद्या ने कहा।
"तुम मेरी माँ नहीं हो"
यह सुनकर विद्या कांप उठी। उसने नीरज को गौर से देखा। धुंधली रोशनी में उसका चेहरा कुछ अलग सा लग रहा था। विद्या के शरीर में डर की लहर दौड़ गई।

अचानक नीरज बिस्तर पर लेट गया, घर की बत्तियाँ जल गईं, विद्या ने नीरज की तरफ देखा, नीरज पसीने से भीगा हुआ था।
अगले दिन विद्या ने यह बात प्रभाकर को बताई, जिसे सुनकर प्रभाकर भी थोड़ा परेशान हो गया।
प्रभाकर ने कहा, "क्या हमें विद्या नीरज को मनोचिकित्सक को दिखाना चाहिए?" "अरे, तुम क्या कह रही हो, क्या तुम्हारा मतलब है कि नीरज पागल है?" विद्या की आवाज में कंपन था।
"विद्या, पिछले कुछ दिनों से मैंने नीरज में कुछ बदलाव देखे हैं, वह पहले जैसा नहीं लगता," प्रभाकर ने कहा।
लेकिन इस बारे में सोचने के बाद, दोनों ने मनोचिकित्सक से मिलने का फैसला कुछ और दिनों के लिए टाल दिया।
और ठीक अगली रात...
प्रभाकर, विद्या और नीरज सो रहे थे, रात के 12:15 बज रहे थे और घर की बत्तियाँ चली गईं। प्रभाकर जाग उठा और खड़ा हो गया। अँधेरे में टटोलते हुए उसने अपना मोबाइल हाथ में लिया और टॉर्च जलाई। टॉर्च को एक तरफ घुमाते ही उसने देखा कि नीरज वहाँ नहीं है। यह देखकर वह डर गया और विद्या को जगाया। दोनों जल्दी से जाग गए। घर में घना अँधेरा था। बाहर एक कुत्ता भौंक रहा था। टॉर्च की रोशनी में दोनों घर के बैठक कक्ष में आए। दोनों नीरज को पुकार रहे थे और इधर-उधर ढूंढ रहे थे लेकिन नीरज की तरफ से कोई जवाब नहीं मिला। विद्या अब तक राडकुंडी तक पहुँच चुकी थी और अचानक दीवार पर किसी के कुछ मारने जैसी आवाज़ आई।
प्रभाकर और विद्या दोनों सतर्क हो गए, आवाज ऊपर हॉल से आ रही थी। प्रभाकर ने धीरे से हॉल में रखी अलमारी पर टॉर्च की रोशनी डाली और सामने का दृश्य देखकर दोनों ने अपना सिर घुमाया। नीरज सामने वाली अलमारी पर दीवार की ओर पीठ करके बैठा था और उसका सिर दीवार से टकरा रहा था।
“नहीं… नीरज”, प्रभाकर ने कांपती हुई आवाज में नीरज को पुकारा, और नीरज रुक गया लेकिन उसने पीछे मुड़कर नहीं देखा।
"और... विद्या, अंदर आओ और स्टूल ले आओ," प्रभाकर ने विद्या से कहा, लेकिन विद्या चुप रही और नीरज को देखती रही।
"विद्या... अंदर से स्टूल ले आओ," प्रभाकर ने तेज आवाज में कहा, जैसे ही विद्या को होश आया और वह दौड़कर बेडरूम में चली गई।

प्रभाकर धीरे-धीरे कप्ता की ओर बढ़ा और तभी विद्या की अंदर से ज़ोरदार चीख सुनाई दी। उसकी आवाज़ सुनकर प्रभाकर का दिल बैठ गया और वह दौड़कर अंदर गया। धुंधली सफेद रोशनी में विद्या का डरा हुआ, पसीने से भीगा चेहरा बिस्तर की ओर था। प्रभाकर ने टॉर्च की रोशनी बिस्तर पर डाली और देखा कि नीरज बिस्तर पर सो रहा था।
विद्या कांपती हुई वहीं खड़ी रही। प्रभाकर बाहर भागा, उसने अलमारी की तरफ देखा लेकिन वहां बैठा नीरज गायब हो चुका था। घर की बत्तियां वापस जल चुकी थीं।
प्रभाकर और विद्या को पूरी रात नींद नहीं आई। दोनों नीरज के बगल में बैठे थे। सुबह के समय दोनों की नींद खुल गई।
सुबह प्रभाकर और विद्या दोनों गहरी सोच में डूबे हुए थे। नीरज के साथ जो हो रहा था, वह उनकी समझ से परे था।
"प्रभाकर, मुझे अब बहुत डर लगने लगा है, क्या तुमने नहीं देखा कि कल रात क्या हुआ?" विद्या ने कहा।
"विद्या, मैं इसी बारे में सोच रहा हूँ। मुझे पूरी रात नींद नहीं आई, मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या करूं," प्रभाकर ने कहा।
"प्रभाकर, मुझे लगता है... हमें श्रीरंग दादा को बुलाना चाहिए," विद्या ने कहा।
"हम्म... ठीक है, आज ही फोन करते हैं।"
श्रीरंग विद्या के मामा थे। विद्या ने श्रीरंग को फोन किया और उन्हें सारी घटना बताई। श्रीरंग ने पूरी कहानी ध्यान से सुनी।
"विद्या... चिंता मत करो, मैं कल आऊंगा, लेकिन तुम अपना ख्याल रखना," श्रीरंग ने कहा।
"जी दादाजी, लेकिन क्या इसमें कोई खतरा है?" विद्या ने पूछा।
"क्या आप मुझे प्रभाकर का फोन दिलाएंगे?", श्रीरंग।
"बोलो, श्रीरंगदा," प्रभाकर ने कहा।
श्रीरंग ने कहा, "प्रभाकर, विद्या ने मुझे सब कुछ बता दिया है, कल रात जो कुछ हुआ वह बहुत डरावना था, नीरज पर ध्यान देना और रात में सावधान रहना, मैं कल सुबह जल्दी आऊंगा, तब मैं तुम्हें विस्तार से बताऊंगा।"
"ठीक है दादाजी," प्रभाकर ने कहा।

रात शुरू हो चुकी थी और प्रभाकर और विद्या के मन में डर बढ़ता जा रहा था।
खाना खाने के बाद नीरज सो गया, लेकिन विद्या और प्रभाकर अभी भी जाग रहे थे।
दोनों रात भर जागते रहे, लेकिन कुछ भी अप्रिय नहीं हुआ। दोनों सुबह दो बजे के बाद सो गए।
बाहर एक कुत्ता भौंक रहा था। रात के 3 बज रहे थे। प्रभाकर किसी आवाज़ से जाग गया। उसने बगल में देखा तो विद्या और नीरज शांति से सो रहे थे। वह उठा और रसोई में गया। उसने फ्रिज खोला, पानी की बोतल निकाली और पी ली। बोतल अंदर रखने के बाद जैसे ही वह मुड़ने वाला था, उसे किसी ने धक्का दिया। उसने चारों ओर देखा लेकिन वहाँ कोई नहीं था। जब वह वापस बेडरूम में आया तो उसने देखा कि विद्या उठ बैठी थी।
प्रभाकर विद्या के करीब आया। विद्या की आँखों में आँसू थे।
"क्या हुआ विद्या, तुम क्यों रो रही हो?" प्रभाकर ने चिंता से पूछा। "प्रभाकर... प्रभाकर, मैंने एक सपना देखा, नीरज सपने में आया, वह रो रहा था, वह फंसा हुआ है, प्रभाकर... वह हमारे चारों ओर है", विद्या जोर-जोर से बोल रही थी।
"शांत हो जाओ, विद्या... देखो, हमारा नीरज यहीं है, वह चैन से सो रहा है," प्रभाकर ने अपने बगल में सो रहे नीरज की ओर देखते हुए कहा।
"प्रभाकर हमारा नीरज नहीं है... यह हमारा नीरज नहीं है।"
प्रभाकर ने विद्या को गले लगाया और उसे शांत किया। लेकिन उसके मन में भी शंकाओं का तूफान उठ खड़ा हुआ था। सुबह के समय, दोनों सो गए।
सुबह आठ बजे दरवाजे की घंटी बजी। श्रीरंग आ गए थे। श्रीरंग लगभग चालीस वर्ष के थे। वे एक मजबूत व्यक्तित्व के धनी थे। उनकी आवाज़ ऐसी थी जो सामने वालों को चुनौती देती थी और संकट में फंसे लोगों को सहारा देती थी। श्रीरंग को देखकर प्रभाकर और विद्या को बहुत सहारा मिला।
सुबह नौ बजे, सब कुछ समाप्त होने के बाद, श्रीरंग, विद्या और प्रभाकर चाय पी रहे थे। विद्या और प्रभाकर ने सारी सच्चाई बताई और श्रीरंग ने शांत मन से उसे सुना।
"प्रभाकर... विद्या, मुझे आज रात कुछ बातें जाननी हैं, मुझे यह मामला थोड़ा जटिल लग रहा है, लेकिन चिंता मत करो, सब ठीक हो जाएगा," श्रीरंग ने कहा।

तब तक नीरज उठकर बैठक में आ चुका था। श्रीरंग नीरज को देख रहा था। श्रीरंग को देखकर नीरज थोड़ा असहज महसूस करने लगा। नीरज ने अपनी नज़रें उससे हटाईं और अंदर चला गया। उसका व्यवहार वाकई परेशान करने वाला था।
"ठीक है विद्या, मैं थोड़ी देर में बाहर जा रहा हूँ, हमारे गुरुजी का शहर में एक मठ है, मैं वहाँ जा रहा हूँ, मैं शाम को लौट आऊँगा, प्रभाकर, अगर तुम्हारा मन करे तो तुम काम पर जाओ और शाम को जल्दी वापस आ जाओ", श्रीरंग। "नहीं, मैं आज घर पर ही रहूंगा," प्रभाकर ने कहा।
कुछ देर बाद श्रीरंग घर से चला गया। प्रभाकर और विद्या ने अपना रोज़ाना का काम शुरू कर दिया। दिन धीरे-धीरे बीत रहा था। नीरज पूरे दिन अपने कमरे में अकेला रहा। दोपहर के भोजन के अलावा वे तीनों कभी साथ नहीं आए थे। विद्या और प्रभाकर नीरज को देखते-देखते ऊब रहे थे।
शाम आठ बजे श्रीरंग मठ से लौटा। सब लोग भोजन करने बैठे थे। सबने अपना भोजन समाप्त कर लिया था और आराम से बैठे थे। जैसे ही नीरज बेंच से उठने वाला था, श्रीरंग ने नीरज को आवाज़ दी।
"नीरज," श्रीरंग ने धीमी आवाज में कहा, नीरज को ध्यान से देखते हुए, क्योंकि नीरज फिर से बेचैन हो गया था।
"क्या, अंकल?" नीरज का घबराया हुआ स्वर।
श्रीरंग ने कहा, "कुछ नहीं है, बेटा, जाओ और अब चैन से सो जाओ।"
आधी रात हो चुकी थी। श्रीरंग बैठक में बैठा था। वह आंखें बंद करके कुछ मंत्रों का जाप कर रहा था। उसके सामने मोमबत्तियों का एक घेरा बना हुआ था।
अचानक घर की बत्तियां चली गईं। प्रभाकर और विद्या दोनों जाग गए थे। प्रभाकर ने टॉर्च जलाई। नीरज बिस्तर पर करवटें बदलने लगा था। विद्या और प्रभाकर बिस्तर से नीचे उतर आए।
"मेरे सामने आओ," श्रीरंग की तेज़ आवाज़ बाहर से आते ही नीरज बिस्तर से नीचे उतर गया। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। वह धीरे-धीरे कमरे से बाहर आया और श्रीरंग के सामने बैठ गया।
श्रीरंग ने सख्त स्वर में कहा, "बताओ, तुम कौन हो?" लेकिन नीरज चुपचाप बैठा रहा, कुछ नहीं बोला, बस श्रीरंग को घूरता रहा।
श्रीरंग ने ऊंची आवाज में कहा, "मुझे बताओ तुम कौन हो, तुम्हारा नाम क्या है, तुमने यह शरीर क्यों धारण किया... मुझे बताओ।"
"तुम यहाँ क्यों हो, यहाँ से चले जाओ," नीरज।

श्रीरंग ने अपने कपड़े के थैले से नमक की थैली निकाली, उसमें से नमक का पाउडर निकाला और नीरज के शरीर पर छिड़क दिया। नीरज को उस पर दया आने लगी। यह सब देखकर प्रभाकर और विद्या बहुत परेशान हो रहे थे।
श्रीरंग ने बोलना शुरू करते हुए कहा, "अब मुझे अपना नाम बताओ, वरना तुम जलकर राख हो जाओगे।"
"मेरा नाम अखिलेश है, मैं अपनी मां से मिलना चाहता हूं... मेरी मां को फोन कीजिए," उसने सहानुभूति से कहा।
"आपकी मृत्यु कैसे हुई?"
"दुर्घटना... दुर्घटना... दुर्घटना," नीरज बेहोश होते हुए बोला।
श्रीरंग और प्रभाकर ने नीरज को बिस्तर पर लिटाया और सभी सो गए।
अगली सुबह श्रीरंग और प्रभाकर जल्दी अस्पताल गए। वहाँ पूछताछ करने पर उन्हें पता चला कि पिछले दिन उसी कमरे में अखिलेश नाम के एक लड़के की मौत हो गई थी जहाँ नीरज था।
श्रीरंग को अस्पताल से अखिलेश के पिता का फोन नंबर मिल गया। प्रभाकर और श्रीरंग अखिलेश के पिता से मिलने उनके घर गए।
श्रीरंग ने अखिलेश के पिता से कहा, "दिनकर राव, जो कहानी मैं अब आपको बताने जा रहा हूं, वह थोड़ी अविश्वसनीय है।"
दिनकरराव ने प्रश्नवाचक दृष्टि से उसकी ओर देखा और कहा, "अविश्वसनीय का मतलब... मुझे स्पष्ट रूप से बताओ।"
"यह कहानी आपके बेटे अखिलेश के बारे में है, लेकिन उससे पहले मुझे आपसे कुछ जानकारी चाहिए, अखिलेश की मृत्यु कैसे हुई, किन परिस्थितियों में हुई," श्रीरंग ने कहा।
दिनकरराव थोड़ा बेचैन था, और उसे गले में खराश महसूस होने लगी।
“अखिलेश के जाने को एक महीना हो गया है। उस सुबह मेरी पत्नी नासिक में अपने मायके गई थी। अखिलेश भी उसके साथ जाने वाला था, लेकिन उसने मेरे साथ यहीं रुकने की ज़िद की और मेरी पत्नी अकेले नासिक चली गई। शाम को मैं अखिलेश को खेत तक ले गया। वहाँ से लौटते समय, अखिलेश और मैं साइकिल पर घर आ रहे थे। एक मोड़ पर अचानक एक तेज़ रफ़्तार कार सामने आ गई। मैंने ब्रेक लगाया और कार फिसल गई। मैं सड़क के एक किनारे गिर गया। अगले ही पल मुझे एहसास हुआ कि अखिलेश कार के नीचे आ गया है। मैं तुरंत उसे अस्पताल ले गया और वहाँ उसका इलाज शुरू किया। मेरी पत्नी नासिक से चली गई थी, लेकिन अखिलेश के अस्पताल

पहुँचने से पहले ही उसकी मौत हो गई थी,” दिनकरराव दुखी स्वर में पूरी सच्चाई बता रहे थे।
श्रीरंग ने पूछा, "आपकी पत्नी अब कहाँ हैं? क्या मैं उनसे बात कर सकता हूँ?"
"अखिलेश के जाने के बाद से उसने एक शब्द भी नहीं बोला है, लेकिन आप ये सब क्यों पूछ रहे हैं?", दिनकरराव ने कहा।
श्रीरंग ने कहा, "दिनकर राव, आप सब कुछ समझ जाएंगे, हम पर भरोसा रखिए, एक बार अपनी पत्नी को फोन कीजिए, उनसे बात करना बहुत जरूरी है।"
दिनकरराव प्रभाकर और श्रीरंग को अंदर के कमरे में ले गए, जहाँ दिनकरराव की पत्नी खाली निगाहों से बैठी हुई थी। उसने यह भी ध्यान नहीं दिया कि उसके कमरे में कौन आया है। श्रीरंग ने एक कुर्सी खींची और उसके सामने बैठ गया। "बहन, मैं तुम्हारा दुख समझ सकता हूँ, तुम्हारे बेटे अखिलेश के अचानक इस दुनिया से चले जाने के लिए मुझे खेद है, लेकिन अब खुद को संभालो," श्रीरंग बोल रहा था, लेकिन प्रमिला की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई।
अंत में, श्रीरंग ने कहा, "माँ... अखिलेश... आपका बेटा, उसकी जान खतरे में है।"
यह सुनकर प्रमिला परेशान हो गई, उसने श्रीरंग की ओर सिर घुमाकर कहा, "तुमने क्या कहा, मेरे बेटे... अखिलेश की जान खतरे में है।"
"जी आंटी, मुझ पर भरोसा कीजिए। अखिलेश आपसे मिलना चाहता है, उसकी आत्मा आपसे आखिरी बार मिलने के लिए वहीं अटकी हुई है," श्रीरंग ने कहा।
यह सुनकर दिनकरराव और प्रमिला की आँखों में आंसू आ गए। श्रीरंग ने उन्हें नीरज के साथ घटी पूरी घटना सुनाई। दोनों यह सुनकर स्तब्ध रह गए।
उसी रात, दिनकरराव और प्रमिला दोनों प्रभाकर के घर आए। रात शुरू हो चुकी थी। श्रीरंग ने अपने सामने मोमबत्तियों का घेरा बनाया हुआ था। उनके हाथ में रुद्राक्ष की माला थी। मंत्रों का जाप धीमी आवाज़ में हो रहा था। रात के सवा बारह बजे घर की बत्तियाँ बुझ गईं। नीरज, जो पलंग पर लेटा हुआ था, आकर श्रीरंग के सामने बैठ गया। दिनकरराव और प्रमिला दोनों वहीं मौजूद थे। श्रीरंग ने कहा, "अखिलेश... तुम्हारी मां तुमसे मिलने आई हैं।"
उस आवाज ने नीरज की बेजान आंखों में कुछ हलचल पैदा कर दी और उसने कहा, "मां..."।
यह अखिलेश की आवाज थी।

"यह... यह अखिलेश की आवाज है," प्रमिला ने आगे आकर कहा।
"माँ, तुम मुझसे मिलने आई थीं।"
"हां बेटा, मैं आ गई हूं," प्रमिला ने अखिलेश को गले लगाते हुए कहा और दोनों रोने लगे। सबकी आंखों में आंसू बह रहे थे। अखिलेश काफी देर तक अपनी मां की गोद में लेटा रहा।
"माँ, मुझे अब जाना होगा," अखिलेश ने एक तरफ हटते हुए कहा। प्रमिला मुश्किल से रो रही थी।
"नहीं, प्यारे, मैं तुम्हें जाने नहीं दूंगी," प्रमिला ने अखिलेश को फिर से अपने करीब खींचते हुए कहा।
"माँ, पिताजी, मुझे अब जाना होगा। मैं आप सबको आखिरी बार देखना चाहता था, इतना कि मेरी जान ही रुक गई थी। लेकिन अब मुझे यह शरीर छोड़ना होगा," अखिलेश ने कहा।
दिनकरराव प्रमिला को एक तरफ ले गए। नीरज का शरीर धीरे-धीरे ढीला पड़ने लगा। और वह एक करवट लेट गया। उसके शरीर से एक पारदर्शी आकृति धीरे-धीरे निकली और गायब हो गई। अखिलेश जा चुका था। नीरज का शरीर स्थिर पड़ा था। "श्रीरंग दादा, मेरा नीरज कहाँ है?", विद्या दौड़ती हुई आगे आई। लेकिन श्रीरंग ने उसे रोक दिया।
अगले ही पल उसने पास पड़ी एक वस्तु निकाली और नीरज के शरीर पर छिड़क दी। देखते ही देखते नीरज का शरीर हिलने लगा। नीरज की सूक्ष्म आत्मा ने अपना शरीर पुनः प्राप्त कर लिया था। नीरज धीरे-धीरे उठ बैठा। वह बिल्कुल पहले जैसा दिख रहा था। उसने प्रभाकर और विद्या को देखकर मुस्कुराया। विद्या ने उसे प्यार से गले लगा लिया।
अगले दिन, श्रीरंग, प्रभाकर और विद्या चाय पी रहे थे। श्रीरंग दोपहर की ट्रेन पकड़कर गांव जाने वाला था।
"श्रीरंग दादा, नीरज एक बहुत बड़े संकट से बाहर आ गए हैं, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद," विद्या ने कहा।
"आप आभारी कैसे हो सकते हैं? अरे, नीरज भी तो मेरा भतीजा है," श्रीरंग ने मुस्कुराते हुए कहा।
"लेकिन दादा, यह सब अविश्वसनीय है," प्रभाकर ने कहा।
श्रीरंग ने कहा, "हां, जीवन और मृत्यु के बीच एक पतली सी रेखा होती है, जिसके पार एक रहस्यमय दुनिया है जिसे अभी तक कोई भी सुलझा नहीं पाया है।"

"लेकिन दादा नीरज फिर कभी किसी मुसीबत में नहीं पड़ेंगे, है ना?" विद्या ने पूछा।
"नहीं, अब उसे कोई परेशानी नहीं होगी, आप दोनों निश्चिंत रहें," श्रीरंग ने आश्वस्त करने वाले स्वर में कहा।

पीपल टाइम्स

मनीष और अमोल, दोनों जुड़वा भाई थे। नौ साल के ये दोनों भाई बहुत शरारती और चंचल थे। लगभग एक साल बाद, वे अपने माता-पिता के साथ कोंकण में अपने मामा के गांव आ गए।
कोंकण में रहने वाले उनके मामा की दो बेटियाँ और एक बेटा था। बेटे का नाम सुरेश था, जो चौदह वर्ष का था। बीच वाली बेटी कविता 12 वर्ष की थी और सबसे छोटी बेटी प्राणायाम 9 वर्ष की थी।
कोंकण में मेरे चाचा का एक बड़ा दो मंजिला बंगला था। उसमें एक बड़ा आंगन और सामने एक छोटा सा बगीचा था। गांव वाला घर थोड़ी ही दूरी पर था। आसपास का इलाका शांत था। जब हम चाचा के गांव जाते थे, तो हम दोनों खूब मजे करते थे।
हम पूरा दिन खेलते-कूदते और मौज-मस्ती करते बिताते थे।
उस दिन, मेरे चाचा के एक मित्र ने सभी को रात के खाने पर आमंत्रित किया था। मेरे चाचा के मित्र, मनोहर नायक, एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी थे। गाँव में उनका बहुत सम्मान था। उस दिन सभी ने उनके साथ भोजन किया।
रात के आठ बज रहे थे। कड़ाके की ठंड थी और अमावस्या होने के कारण बाहर घना अंधेरा था। घर में सभी ने खुद को गर्म कपड़ों से ढक रखा था। चाचा के दोस्त का घर लगभग डेढ़ सौ कदम दूर था, इसलिए सभी ने पैदल जाने का फैसला किया। बच्चों के कपड़े पहनते ही, सभी बच्चे आंगन में आ गए और खूब मस्ती करने लगे। सबसे बड़े सुरेश को सभी बच्चों को नायक के घर ले जाने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी, जबकि बड़े बच्चों को नौ बजे आना था। सुरेश सभी को लेकर आंगन के गेट से बाहर निकला। उसके हाथ में टॉर्च थी। बाकी सभी बच्चे आगे चल रहे थे, एक-दूसरे पर शरारतें कर रहे थे और खूब मस्ती कर रहे थे।
नाइक के घर तक कोई दूसरा घर नहीं था। सड़क के दोनों ओर बड़े-बड़े पेड़ थे। पचास कदम आगे एक विशाल, बहुत पुराना पीपल का पेड़ था। मनीष और अमोल दोनों ने एक जैसे कपड़े पहने हुए थे। दोनों के बीच का अंतर आसानी से नज़र नहीं आता था। जब भी कोई अवसर होता, दोनों एक जैसे कपड़े पहनते थे।
थोड़ा आगे चलने पर मनीष को शरारत करने का मन हुआ। उसने अमोल के कान में कुछ फुसफुसाया और अमोल मन ही मन हंसते हुए उसकी योजना में शामिल हो गया। सुरेश सबके पीछे चल रहा था। अचानक मनीष आगे भागा और देखते ही देखते कहीं गायब हो गया। सुरेश ने पीछे से आवाज़ लगाई और दौड़कर आगे गया, लेकिन मनीष

कहीं नज़र नहीं आया। उसने टॉर्च घुमाई, पर उसका कोई निशान नहीं मिला। वह वापस मुड़ा और अमोल से पूछा, "अरे, मनीष कहाँ गया?"
तब अमोल ने कहा, "ओह, मैं मनीष हूं, अमोल कहीं भाग गया था।"
सब लोग उस पर चिल्लाने लगे। इसी अफरा-तफरी में उसके साथ मौजूद अमोल भी कहीं गायब हो गया। सुरेश ने यह देखा और डर से कांप उठा। वह घबराकर इधर-उधर देखने लगा। उसकी दोनों बहनें भी काफी डरी हुई थीं।
"चलो घर वापस चलते हैं और मम्मी-पापा को ले आते हैं," सुरेश ने डरी हुई आवाज में कहा।
जैसे ही वे तीनों वापस मुड़ने वाले थे, उन्हें एक आवाज़ सुनाई दी। वे मुड़कर देखने लगे। सुरेश ने टॉर्च की रोशनी आवाज़ की दिशा में डाली और देखा कि अमोल उसके सामने एक पेड़ के पास खड़ा है, उसका एक हाथ पेड़ पर टिका हुआ है।
"मैं अमोल हूँ, इधर आओ," अमोल ने मुस्कुराते हुए कहा।
सुरेश आगे दौड़ा, लेकिन अमोल अचानक झाड़ियों के पीछे गायब हो गया। सुरेश ने गुस्से से अमोल पर चिल्लाया, तभी दूसरी तरफ से मनीष की आवाज़ आई, "मैं मनीष हूँ, इधर आओ।"
सुरेश का गुस्सा सातवें आसमान पर था। वह जोर से चिल्लाया, "मनीष और अमोल, जल्दी बाहर आओ, नहीं तो हम तुम दोनों को यहीं छोड़कर घर वापस चले जाएंगे, फिर तुम्हारे माता-पिता तुम्हें खूब डांटेंगे।"
यह सुनकर पास की झाड़ी से सरसराहट की आवाज़ आई। सुरेश ने तुरंत अपनी टॉर्च उधर चमकाई। झाड़ी के अंदर थोड़ी दूरी पर एक पीपल का पेड़ था, दोनों उस पेड़ के नीचे खड़े होकर आपस में हंस रहे थे। सुरेश तेज़ी से आगे भागा, तब उसे एहसास हुआ कि वह अमावस्या की रात को इस पीपल के पेड़ के नीचे खड़ा है। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ था और घना अंधेरा था। सुरेश ने पेड़ पर नज़र डाली। हवा का एक तेज़ झोंका आया और पत्तियाँ सरसरा उठीं।
वह उन्हें डांटते-चिल्लाते हुए वहां से बाहर ले आया। कविता और प्रणाली दोनों डर के मारे सुरेश के पीछे भाग रही थीं।
अब सभी लोग सड़क पर हैं।
"अरे, क्या तुम दोनों को समझ नहीं आता कि यह मजाक करने का समय या जगह नहीं है," सुरेश ने गुस्से से कहा।
"अरे, हम तो मजाक कर रहे थे, क्या तुम्हें डर नहीं लग रहा?" मनीष ने कहा।

"अरे, ये तो मजाक है! तुम्हें पता नहीं, वो पीपल का पेड़, जिसके नीचे तुम खड़े थे, अभी भी वहीं है," सुरेश ने धीमी आवाज में, थोड़ा कांपते हुए कहा।
"उस पेड़ पर कौन है?" मनीष ने पूछा।
लेकिन अमोल चुपचाप बिना कुछ बोले चलता रहा।
"अरे, अभी मत बताओ, मैं उसका नाम तक नहीं बता सकता, चलो अब यहां से चलते हैं," सुरेश ने कहा।
पांच मिनट के भीतर सब लोग नाइक के घर पहुँच गए। नाइक का घर बहुत विशाल था।
सब लोग उनके दो बच्चों से मिलने लगे और सब लोग आँगन में खेलने लगे। बड़ों के आने में अभी समय था।
सुरेश के मन में लगातार एक अज्ञात भय उभर रहा था क्योंकि वह अमोल की लड़खड़ाती हुई वाणी और धीमी गति के हावभाव को महसूस कर सकता था।
रात करीब नौ बजे, मामा मामी और अमोल मनीष के माता-पिता आए। सभी बच्चे खेलना बंद करके जल्दी से अंदर आ गए। हाथ-पैर धोने के बाद, सभी एक कतार में बैठ गए। चाचा ने मनीष के माता-पिता का परिचय नायक से कराया। चाचा ने मनीष की ओर इशारा करते हुए उसका परिचय कराया और मनीष ने नायक को प्रणाम किया।
फिर अमोल की ओर इशारा करते हुए चाचा ने कहा, "और यह मनीष का जुड़वा भाई अमोल है।"
यह कहने के बाद, अमोल जगचा खड़े हो गए और बोले, "अमोल कौन है? मैं अमोल नहीं हूँ, मैं भी मनीष हूँ। मेरा नाम मनीष है।"
यह सुनकर सब थोड़े हैरान रह गए। मनीष के चाचा हँसे और बोले, "ये दोनों ही बहुत शरारती हैं।"
सुरेश एक तरफ से चिंतित भाव से देख रहा था। उसे आभास हो गया था कि कुछ गड़बड़ है।
देखते ही देखते सबका खाना तैयार हो गया और सब खाने बैठ गए। जैसे ही खाने की थाली सबके सामने आई, अमोल ने सौतेली बहन की तरह उसे झपट डाला और तेज़ी से खाने लगी। अब तक सबने अमोल में यह बदलाव देख लिया था। लेकिन बिना कुछ कहे, सबने अपना खाना खत्म किया, नायक को अलविदा कहा और अपने-अपने घर की ओर चल पड़े।
अब सब लोग साथ-साथ घर जा रहे थे। अमोल चुपचाप एक दिशा में अकेला चल रहा था। सब लोग पचास कदम दूर उस बड़े पीपल के पेड़ के नीचे पहुँच गए थे कि अचानक सबको एक आवाज़ सुनाई दी, यह अमोल की आवाज़ थी। सब लोग डर के मारे इधर-उधर

देखने लगे। आवाज़ पीपल के पेड़ से आ रही थी। सबने आँखों में चमक लिए अमोल की तरफ देखा, जो उनके साथ था, लेकिन अमोल वहाँ से गायब हो चुका था।
अब हर कोई डर के मारे सहमा हुआ था। जैसे ही अमोल की आवाज दोबारा सुनाई दी, उसके चाचा पेड़ की ओर दौड़े, उनके पीछे अमोल के पिता भी दौड़े।
जब वे पेड़ के नीचे पहुँचे, तो उन्होंने चारों ओर देखा और पाया कि अमोल पेड़ की कुछ ऊँची शाखाओं पर डरा हुआ बैठा है। अपने पिता को देखते ही वह रोने लगा। उसके चाचा जल्दी से पेड़ पर चढ़े और धीरे-धीरे अमोल को नीचे ले आए।
बाकी सब लोग भी आसपास जमा हो गए थे। कविता और प्रसाद रो रहे थे। जो कुछ हो रहा था, वह सबकी समझ से परे था। सब लोग अमोल के साथ घर पहुँच गए।
अमोल के शरीर पर मामूली चोटें आई थीं। उसकी मां ने उसे नहलाया और पट्टी बांधी।
भागदौड़ में काफी समय बीत चुका था। आधी रात हो चुकी थी। सब सोने की तैयारी करने लगे। अमोल अपनी मां के बगल में सो गया।
मनीष और सुरेश अलग-अलग कमरों में सो रहे थे। रात को सोने से पहले सुरेश ने मनीष से कहा।
"मैंने तुम्हारी शरारत देखी, अमोल बहुत परेशान था, तुम्हें उस पेड़ के पास नहीं जाना चाहिए था।"
लेकिन मनीष की ओर से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई। वह चुपचाप आंखें फाड़कर छत को घूर रहा था।
"अरे ऎकतोस ना मनीष...मनीष"
"मनीष कौन है... मैं मनीष नहीं, अमोल हूँ... हा हा हा"

अंतिम घंटा

"रोहन उठो, 6:30 बज गए हैं, देर हो जाएगी," रोहन की मां ने जोर से कहा।
रोहन जाग तो गया था, लेकिन जानबूझकर उठने में देरी कर रहा था। उसे आज स्कूल जाने की बहुत तीव्र इच्छा थी, और जब भी वह खंबके सर का अजीब सा चेहरा देखता, उसका पेट मचलने लगता। रोहन ने अपनी आँखें बंद कर लीं और चुपचाप बिस्तर पर लेटा रहा। उसकी माँ ने उसकी बेचैनी देखी और रसोई से उसके पास आकर उसकी बांह के नीचे हाथ डालकर उसे उठा लिया।
"माँ... मैं आज नहाने जा रहा हूँ," रोहन ने कहा।
"तुम ऐसा क्यों कर रही हो? परवाबी ने कहा था कि तुम्हारे पेट में दर्द है और तुमने उसे पानी में डुबो दिया, ये क्या है? जल्दी उठो और खुद को ढक लो," मेरी माँ ने थोड़े गुस्से से कहा।
रोहन भारी मन से बिस्तर से उठा। रोहन सोच रहा था कि अपनी माँ को कैसे और किन शब्दों में बताए कि वो खंबके मास्टर उसे परेशान कर रहे हैं, उससे काइबाई की तरह सवाल पूछते हैं और चॉक से मारते हैं। होमवर्क पूरा होने के बावजूद भी वो उसे चिट्ठियों से झूठ लिखकर डांटते हैं। पिछले हफ्ते, रोहन को स्कूल के बाद रोक लिया गया... बिना किसी कारण के और कभी-कभी... इसके बारे में सोचकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। एक बार, क्लास के ब्रेक के दौरान, रोहन नाश्ता खा रहा था और अचानक उसकी नज़र दाईं ओर की खिड़की पर पड़ी। जब उसने देखा, तो खंबके सर खिड़की पर खड़े रोहन को देख रहे थे, उनके चेहरे पर एक अजीब सी, बनावटी मुस्कान थी। उन्हें देखकर रोहन चौंक गया, उसके मुँह में घास नहीं रुकी।
रोहन ने देर तक स्नान किया और अपने स्कूल के कपड़े तैयार किए। उसने स्कूल यूनिफॉर्म पहनी और बैग व बैकपैक लेकर घर से निकल पड़ा। सवा सात बज रहे थे। अगर उसे देर हो जाती, तो शिक्षक को उसे डांटने का बहाना मिल जाता, रोहन तेज़ी से स्कूल की ओर चल पड़ा। नमाज़ शुरू हो चुकी थी। रोहन कक्षा के दरवाजे के सामने खड़ा हो गया। उसने धीरे से अंदर झाँका, उसे यह देखकर राहत मिली कि अंदर कोई शिक्षक नहीं था। नमाज़ खत्म हो चुकी थी और वह कक्षा में प्रवेश करने ही वाला था कि तभी किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा। रोहन मुड़ा और सामने खंबके सर को देखा। रोहन को उनकी आँखों में आज एक अलग ही चमक दिखाई दी।

"क्या बकवास है, क्या तुम समय पर स्कूल नहीं आ सकते?" मास्टर खंबके ने डांटते हुए कहा।
"माफ़ कीजिए मालिक... मैं... वापस नहीं आ पाऊंगा," रोहन ने शर्मिंदा होकर कहा।
"अंदर आओ," मालिक ने उसकी पीठ पर जोर से धक्का देकर उसे अंदर धकेल दिया।
रोहन चुपचाप अपनी सीट पर बैठ गया। मास्टर खंबके आह भरते हुए अंदर आए।
बच्चों ने जल्दी से अपनी होमवर्क की नोटबुक निकाल लीं। रोहन ने भी अपनी नोटबुक निकाली और सबके सामने खोल दी। मास्टर, हाथ में छड़ी लिए, धीरे-धीरे सबकी नोटबुक देख रहे थे और तभी 'छप्पप' की आवाज आई।
“नलाइका, क्या मैंने तुम्हें इसे लिखने को कहा था?”, गुरुजी ने बगल में खड़े महेश पर चिल्लाते हुए उसकी कलाई पर एक और थप्पड़ मारा और आगे बढ़ गए। इस समय रोहन का दिल तेजी से धड़क रहा था। उसका होमवर्क पूरा हो चुका था, लेकिन फिर भी उसके पेट में एक अजीब सा, अनजाना डर पनप रहा था। गुरुजी रोहन की मेज के पास आए और अपनी नोटबुक से नज़रें ऊपर उठाईं। जैसे ही रोहन राहत की सांस लेने ही वाला था, गुरुजी ने उसका कान पकड़कर कसकर मरोड़ दिया। "आई… आई"
“मैंने तुम्हें हज़ार बार कहा है, शिंचा, कि अक्षरों को ऐसे बनाओ जैसे वे स्पष्ट रूप से पढ़े जा सकें, लेकिन तुम सुनने वाले नहीं हो। आज का आखिरी घंटा खत्म होने पर तुम्हें यहीं रुकना चाहिए, घर नहीं जाना चाहिए,” गुरु ने आगे कहा।
रोहन अपने लाल कानों पर हाथ रखे बैठा था। वह आधा घंटा रोहन को घंटों जैसा लगा। घंटे एक के बाद एक बीतते गए। आखिरी घंटा शुरू हो चुका था। आखिरी घंटे के लिए आज शिक्षक नहीं आए थे। बच्चे कक्षा में व्यस्त थे, लेकिन रोहन चुपचाप बैठा रहा।
'आज तुम्हें क्या हो गया है? वो खंभा आज मेरी खूब पिटाई करेगा, पट्टी से तब तक मारेगा जब तक मेरी चमड़ी न छिल जाए', ऐसे ही विचारों ने रोहन को डरा दिया था। इस डर ने रोहन को पूरी तरह जकड़ लिया था, जो पाँचवीं कक्षा में पढ़ने वाला एक छोटा लड़का था। रोहन को समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे और फिर उसने एक विचार सोचा...

स्कूल खत्म होने में सिर्फ दस मिनट बचे थे। मास्टर घंटी बजते ही आ जाएंगे, वो तब तक इंतजार नहीं करने वाले थे। रोहन अपनी सीट से उठा। उसने अपना बैग बगल में दबाया और कक्षा से बाहर भाग गया। बाकी बच्चे उसे बस देखते रह गए। स्कूल की चारों ओर पाँच फुट ऊँची दीवार थी, और उन दीवारों पर दो-दो फुट ऊँचे लोहे के घुमावदार तीर लगे हुए थे। स्कूल का मुख्य द्वार सामने वाले गेट से होकर जाता था। लेकिन वहाँ एक सैनिक खड़ा रहता था, इसलिए वहाँ से जाना संभव नहीं था। सौभाग्य से रोहन की कक्षा एक कोने के पास थी। रोहन चुपके से दाहिनी ओर मुड़कर स्कूल के पीछे आ गया।
दीवार के पास एक कोने में एक बड़ा पेड़ था। रोहन बिना सोचे समझे पेड़ की ओर दौड़ा, हाथ में पकड़ा थैला दीवार के ऊपर से फेंका और पेड़ पर चढ़ने लगा। थोड़ा ऊपर चढ़ने के बाद, रोहन एक शाखा का सहारा लेकर धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगा। उसकी छाती ज़ोर से धड़क रही थी। खंभों के स्वामी का चेहरा उसकी आँखों के सामने आ रहा था और डर से उसका पेट मचल रहा था। वह तेज़ी से हाथ-पैर हिलाते हुए आगे बढ़ा, दीवार को पीछे छोड़ते हुए और कूदने ही वाला था कि हे भगवान…
पेड़ की शाखा पलक झपकते ही टूट गई। रोहन सीधे उन लोहे के तीरों पर गिर पड़ा। पल भर में सब कुछ खत्म हो गया। लोहे के तीर रोहन के पेट में घुस गए और कुछ ही क्षणों में रोहन इस दुनिया से विदा हो गया। रोहन का निधन हो गया। विद्यालय परिसर में भारी भीड़ जमा हो गई थी। रोहन के शव को नीचे उतारा गया। रोहन के घर में अफरा-तफरी मच गई।
कुछ दिन इसी तरह बीत गए...
उस दिन आखिरी घंटा मास्टर खंबके का था। इतिहास का समय था। सभी बच्चों की नोटबुक जाँची गईं, किताबें निकाली गईं और अगला पाठ पढ़ाया गया, और जल्द ही घंटी बज गई और स्कूल की छुट्टी हो गई। राष्ट्रगान बजाया गया और बच्चे जल्दी से कक्षा से बाहर निकल गए। मास्टर खंबके अपना सामान समेटने लगे और तभी कक्षा में एक आवाज़ गूंजी...
'गुरुजी… मैंने पिछले एक घंटे से प्रतीक्षा की है।'
आवाज सुनकर स्तंभों के स्वामी ने मन ही मन आह भरी। उसके रोंगटे खड़े हो गए। उसने धीरे से अपना सिर उठाया, जो सामान समेटने के लिए नीचे झुका हुआ था, और देखा कि...

वह सामने की आखिरी बेंच पर बैठा था... उसकी सफेद कमीज लाल और काले खून से सनी हुई थी... वह लाल आंखों और चेहरे पर मुस्कान लिए गुरु को देख रहा था, उसके दांत बाहर निकले हुए थे।
गुरुजी उसे देखकर चौंक गए। उनके गले में शब्द अटक गए। वे बेंच से उठे और धीरे-धीरे गुरुजी की ओर चलने लगे।
गुरु के पैर मानो ज़मीन से चिपक गए थे। उनके शरीर में कोई ताकत नहीं बची थी। वे पास आए... जी हाँ, यह रोहन था।
मालिक की छाती पर एक ज़ोरदार धमाका हुआ। मालिक गिर पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई।

उसकी आवाज कमजोर है।

आप जानते हैं कि डर क्या होता है। इस दुनिया से परे एक और दुनिया है, जो रहस्यमय और भयानक है, हमारी आँखों की पहुँच से परे, एक अनंत अंधकारमय शून्य जहाँ कोई नहीं जानता कि अंदर क्या छिपा है।
मैं अपने अनुभव सुनना चाहता हूँ... इसलिए ध्यान से सुनिए।
लोगों ने इसे कई नाम दिए हैं, अवसाद, लकवा, मतिभ्रम, जो भी नाम हो, लेकिन जो डर हमें जकड़ लेता है वह जानलेवा होता है।
अनुभव पहिला
यह कहानी तब की है जब मैं नौ या दस साल का था, वह मेरा पहला भयानक अनुभव था, मुझे वह दिन याद नहीं है लेकिन वह रात अभी भी मेरे दिमाग में बसी हुई है, वह याद अभी भी मेरे दिल में चुभती है।
शायद सुबह के तीन बज चुके थे, किसी शोर से मेरी गहरी नींद टूट गई, मैंने धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलीं, नींद धीरे-धीरे कम हो रही थी, बाहर एक कुत्ता भौंक रहा था।
धुंधली दृष्टि धीरे-धीरे साफ हो रही थी और सामने का दृश्य धीरे-धीरे स्पष्ट हो रहा था... तभी मुझे घर की ढलान वाली छत पर कुछ दिखाई दिया। उसके अंग पूरी तरह से काले थे, वे धुएं के छल्ले की तरह हिल रहे थे। अगले ही पल, मेरी नज़र उस चेहरे पर पड़ी। वह भयानक चेहरा अभी भी मेरी आँखों के सामने था। उसका चेहरा उसके शरीर की विपरीत दिशा में मुड़ा हुआ था। उसका लंबा मुँह, उसकी बड़ी-बड़ी सफेद आँखें मुझे घूर रही थीं। मैं अपने दिल की धड़कन महसूस कर सकता था, यह पल-पल बढ़ती जा रही थी। मैंने चीखने की नाकाम कोशिश की, लेकिन आवाज़ मेरे गले में अटक गई।
छत पर बैठी हुई स्त्री ने अब अपना मुंह खोल दिया था, और अपने लंबे, नुकीले दांत दिखाते हुए वह धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी।
मेरे हाथ-पैर कांप रहे थे, हाथ-पैर सुन्न पड़ गए थे। मैं हिल भी नहीं पा रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने मेरे शरीर से सारी ताकत चूस ली हो।
वह अब बिल्कुल मेरे ऊपर थी, मुझे नहीं पता था कि आगे क्या होने वाला है।
मैं भारी शरीर के साथ बेसुध पड़ा था और अचानक उसने चीख मारी और सीधे मुझ पर कूद पड़ी।

II

पैरों पर टिक गया और मेरे शरीर में एक ठंडी कंपकंपी दौड़ गई। मैं एक ज़ोरदार झटके से जाग उठा और कुछ चिल्लाते हुए बैठ गया।
मेरे सामने उस कमरे में कुछ भी नहीं था। वे सिर गायब थे, वे बोरे गायब थे।
मैंने डर के मारे अपने पैरों को देखा, उन्हें कुछ नहीं हुआ था, लेकिन मेरे पैर कांप रहे थे।
अनुभव III
मैं बाईस साल का था। हम कॉलेज में पढ़ने वाले सात-आठ लड़कों का एक समूह था। एक बार गर्मियों की छुट्टियों में हम कोंकण घूमने गए। हम सभी समुद्र तट पर बने एक छोटे से होटल में ठहरे थे।
हमने पूरा दिन बाहर घूमते-फिरते बिताया। हमने समुद्र देखा, नाव की सवारी की। दिन बहुत आनंददायक रहा। रात के खाने के बाद हम सब जल्दी सो गए। दिन भर चलने से हम बहुत थक गए थे। मुझे देखते ही नींद आ गई।
आधी रात हो चुकी थी। मैं जाग गया। मुझे होटल का कमरा साफ़ दिखाई दे रहा था। मैं अपने दोस्त को सामने वाले बिस्तर पर सोते हुए देख सकता था, और कई सालों बाद, मुझे फिर से वही भयानक अनुभव हुआ। मेरा पूरा शरीर अकड़ गया था। मेरे हाथों और पैरों में कोई ताकत नहीं बची थी।
मुझे वही पतली लेकिन दिल दहला देने वाली आवाज़ सुनाई दी। वह मेरे बिस्तर के नीचे से आ रही थी। मैं जानती थी कि वह लौट आई है। लेकिन मुझे इस बात का ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि आगे क्या होने वाला है।
अगले ही पल, बिस्तर के नीचे से एक हल्का सा झटका लगा। मुझे अपनी पीठ के नीचे कुछ हिलता हुआ महसूस हुआ। धीरे-धीरे हिलने वाले जीवों की संख्या बढ़ने लगी। मेरी पीठ में दर्द होने लगा। कई उंगलियां मेरी पीठ को काट रही थीं, लेकिन मैं हिल भी नहीं पा रहा था। डर के मारे मैं पसीने से भीग गया था। मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मुझे धीरे-धीरे बिस्तर से ऊपर उठाया जा रहा हो, मेरा बेबस शरीर हवा में ऊपर उठ रहा था। मेरी पीठ के नीचे जो भी था, वह मुझे छत की ओर ले जा रहा था।
मेरी आधी जिंदगी डर से घिरी हुई थी। मुझे लगा जैसे मेरा अंत निकट है और अगले ही पल उस कमरे की बत्तियाँ जल उठीं। मैंने सामने देखा, मेरा दोस्त जाग गया था। वह मेरे पास आया। मैं बिस्तर पर डर से कांप रहा था।
उन्होंने मुझे जगाया और पानी पिलाया। कुछ देर बाद मैं चैन से सो गया।

अगले दिन हम टहलने निकले। उस रात की यादें मेरे मन में ताज़ा थीं, लेकिन मैं अपने दोस्तों के साथ मौज-मस्ती करने में इतना मशगूल था कि कुछ कह नहीं पा रहा था।
हमने काफी देर तक समुद्र तट पर खेल खेले। हम पानी में तैरे। कुछ देर बाद, जब मैं थक गई, तो मैं एक छोटे से किनारे पर आकर अकेली एक पेड़ के नीचे बैठ गई। थोड़ी देर बाद, एक आदमी वहाँ आया। उसने सफेद साड़ी पहनी हुई थी। उसके पैरों में धोती थी और गले में रुद्राक्ष की माला थी।
वह मेरे बगल में बैठ गया और मेरी तरफ देखकर बोला, "उसकी नजर तुम पर है, तुम्हारे रिश्तों पर दबाव है।"
यह सुनकर मैं विचलित हो गया। उसने ध्यान से मेरे चेहरे को देखा, अपना अंगूठा मेरे माथे पर रखा, अपनी आँखें बंद कीं और कहा, "वह तुम्हारे बहुत करीब है।"
मुझे कुछ समझ नहीं आया। मैं बस सवालिया निगाहों से उसे देखता रहा। वह मुझे बता रहा था कि मैं खतरे में हूँ, एक औरत से खतरा है और वह औरत मेरे करीब है। मेरे घर में मेरे माता-पिता, मेरा छोटा भाई और कई रिश्तेदार हैं, लेकिन हमारा किसी से कोई झगड़ा नहीं है। किसी से कोई दुश्मनी या कहा-सुनी नहीं है।
अनुकेश और गिरिजा, जो हनीमून पर थे, अपने होटल के बाहर एक छोटे से बगीचे में बैठे थे। अनुकेश ने गिरिजा को अपने सारे अनुभव बताए थे। गिरिजा के चेहरे पर डर साफ झलक रहा था।
"पिताजी... आपने इतना भयानक अनुभव सहा है, इसके बारे में सुनकर दिल टूट जाता है," गिरिजा ने कहा।
अनुकेश ने कहा, "हां, कई साल हो गए हैं, मुझे अभी तक ऐसा कोई अनुभव नहीं हुआ है।"
"लेकिन अनु, मैं तुम्हें बता दूं, मुझे लगता है कि यह सब हमारे मन में ही उत्पन्न हुआ है। हमारे मन में बैठा डर समय-समय पर सिर उठाता है और फिर हमारे मन की गहराई में सुप्त अवस्था में रह जाता है," गिरिजा ने कहा। अनुकेश ने कहा, "फिर भी, यह अनुभव मेरे लिए वास्तव में जानलेवा था।"
"खैर, काफी रात हो गई है, अनु, चलो सो जाते हैं," गिरिजा ने कहा।
अनुकेश और गिरिजा अपने कमरे में गए, रात के ग्यारह बज चुके थे। दोनों सो गए।

□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□, □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □ □□□ □□, □□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□

□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□, □□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□

□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□, □□□□□ □□□□ □□□, □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□-□□□ □□□□□ □□□

□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□, □□ □□□□ □□□□, □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□

□□□□ □□ □□, □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□, □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□, □□□□□□ □□□□-□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□, □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□, □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□

***** □□□□□□ *****

sjeet